بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

الصّلوٰۃ والسّلام علیکَ یا رسول اللہ ﷺ

ग्यारह क़दम

तस्नीफ़

मुफ़स्सिरे आज़म पाकिस्तान, शेखुल-कुरआन

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती फ़ैज़ अहमद ऊवैसी रज़वी

नाशिर

ताज-ए-नूरी ग्रुप

नासिक, महाराष्ट्रा

नाम किताब : **ग्यारह क़दम**

मुसन्निफ़ : हज़रत अल्लामा मुफ़्ती फ़ैज़ अहमद उवैसी रज़वी

गर्ज़ व ग़ायत : तहफ़्फ़ुज़ व तरवीज असासए उलमाए अहले सुन्नत

इशाअ़ते अव्वलः २०१७ / १४३८ हि.

ब-मवक़अ-ए-जूलूसे-ए-ग़ौसिया शरीफ़

सफ़हात : 48

بسم اللہ الرحمن الرحیم

نحمدہ ونصلی ونسلم علیٰ حبیبہ الکریم۔ امّا بعد

नमाज़े ग़ौसिया जो सलातुल-असरार के नाम से मशहूर है हल्लुल-मुश्किलात के लिये इकसीर का असर रखती है। इस नमाज़ के हर अमल पर मुख़ालिफ़ीन को ऐतिराज़ है, बिल-खुसूस ग्यारह क़दम चल कर बग़दाद की जानिब आने जाने को शिर्के अज़ीम से ताबीर करते हैं। फ़क़ीर ने इस रिसाले में उन के हर ऐतिराज़ का दनदाने शिकन जवाब दिया है। ये सारा फ़ैज़ है ''इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिस बरेलवी रहमतुल्लाहि अलैहि'' का वर्ना من آنم کہ خود دانم

وما توفیقی الا باللہ العلی العظیم

وصلی اللہ علیہ وعلیٰ آلہٖ واصحابہ اجمعین

मदीने का भिकारी अल-फ़क़ीर अल-क़ादरी

अबुस्सालेह मुहम्मद फ़ैज़ अहमद ऊवैसी रज़वी ग़ुफ़िर लहू

बहावल पूर- पाकिस्तान १६, मुहर्रम १४२३ हि.

विलादतः

महबूबे सुब्हानी कुत्बे रब्बानी मुहियुद्दीन अब्दुल-क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु अन्हू जब हज़रत अबू सालेह के घर पैदा हुए तो शम्अे नूर (ग़ौसे आज़म) ने दुनिया को चारों तरफ़ रौशन कर दिया, जिस से दीने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रौनक़ व बरकत और ताज़गी नसीब हुई। आप रज़ियल्लाहु अन्हू चूंकि माहे रमज़ान में पैदा हुए, इसी वजह से आप इस मुक़द्दस महीने में दिन को वालिदा माजिदा का दूध नहीं पीते थे यानी आप रज़ियल्लाहु अन्हू पैदाइशी तौर पर रोज़ा दार थे।

तालीमः

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हू मदरसा-ए-निज़ामिया बग़दाद में जब तालीम मुकम्मल कर चुके तो इबादत व रियाज़त की आदत डाल ली। पहले एक साल मदाइन के खन्डरात में दिन रात ज़ियादे हक़ में बसर किया। फिर बरसों तक इशा के वज़ू से सुबह की नमाज़ पढ़ी। २५ साल के मुजाहिदात के बाद आप ने शेखुश्-शुयूख़ अबू सईद मख़ज़ूमी रज़ियल्लाहु अन्हू के दस्त पर बेअत की और सुलूक में बहुत बड़ा मक़ाम व मर्तबा हासिल किया।

मुहियुद्दीनः

आप रज़ियल्लाहु अन्हू वह हैं जिन्हों ने पैदा होते ही खुदा के फ़र्ज़ करदा रोज़ों को अदा किया, फिर जब बालिग़ हुए तो आप ने शरीअ़ते इस्लामिया पर आने वाली ज़ुलमात को खूब साफ़ फ़रमाया, यहां तक कि निज़ामे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुकम्मल तौर पर निफ़ाज़ हो गया और दीन को हयाते नौ नसीब हुई। इसी लिये आप को मुहियुद्दीन कहा जाता है। आप को मुहब्बते इलाही में वह कमाल हासिल था कि इश्क़े खुदा वंदी आप की हर अदा से ज़ाहिर होता था। अब्दुल-क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु अन्हू मनज़िले वहदत में मुस्तग़रक़ थे कि बस खुदा ही खुदा

आप को याद था और ग़ैर से आप बिल्कुल बे-ख़बर थे।

दीन ज़िन्दा कर दियाः

एक मर्तबा महबूबे सुब्हानी एक ग़ैर आबाद सुनसान जगह से गुज़र रहे थे, ये वह ज़माना था कि जब आप इख़्लास व वफ़ा और तलबे सादिक़ की ला-तादाद मिसालें क़ायम करके हरीमें कुद्स (ख़ानए कअ़बा) के महरम और ला-मकां की वुस्अतों के शहबाज़ बन चुके थे और खुसूसी नूरे बसीरत हासिल होने की वजह से ग़ैर महसूस हक़ाइक़ व मआनी को महसूस सूरत में देख सकते थे।

आप रज़ियल्लाहु अन्हू ने एक कमज़ोर और ख़स्ता हाल बूढ़ा रास्ते में लेटा हुआ देखा, उस के चहरे पर मुर्दनी और वीरानी छाई हुई थी मगर आप को उस पर बे-इख़्तेयार प्यार आ गया। गोया कोई अपना ही अज़ीज़ और महबूब हो। आप उस के सिरहाने पर ख़ड़े हो गए। मसीहा को महरबान और सर पर खड़ा देख कर जां ब-लब (मरने के क़रीब) मरीज़ ने आंखें खोल दीं, जैसे उस की जान में जान आ गई हो और वह जान गया हो कि अब शिफ़ा याब और तन-दुरुस्त होने में कुछ देर नहीं।

बूढ़े ने लरज़ता हुआ कमज़ोर हाथ बढ़ाया, आप ने मज़बूत होथों से थाम लिया। बूढ़े की रगों में बिजली की सी तेज़ रव दौड़ गई और जिस्म में तवानाई अंगड़ाइयां लेकर बेदार हो गई। देखते ही देखते उस के मुरझाए और सूखे चहरे पर निखार आ गया। कमज़ोरी और ना-तवानाई जाती रही। सुस्ती व काहिली ख़त्म हो गई और कमज़ोरी का निशान तक न रहा, जो अभी थोड़ी देर पहले मौजूद था।

आप रज़ियल्लाहु अन्हू ने उस की बदलती कैफ़ियत को महसूस किया और इस मोजिज़ाना तबदीली पर हैरान रह गए। बूढ़े की जगह खड़े अब खूबसूरत जवान ने जवाब दियाः अब्दुल-क़ादिर! हैरान होने की ज़रूरत नहीं, मैं दीने इस्लाम हुं। मेरी हालत निहायत ख़राब और ख़स्ता हो चुकी थी। तुम ने मुझे सहारा देकर कुव्वत बख़्शी है, मुझे ज़िन्दा किया है। प्यारे तुम मुहियुद्-दीन हो।

दीन व दुनिया का हाले ज़ार

ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नूरे बसीरत से बहरा-वर हक़ीक़त शनास आँखों ने दीन को जिस मिसाली सूरत में देखा बग़दाद की अमली सूरत उसका भयानक नमूना थी। दीन की गिरफ़्त ज़हन व किरदार पर ढीली पड़ चुकी थी, जिसके नतीजे में वह तमाम अख़लाक़ी क़दरें दम तोड़ चुकी थीं जो उसका लाज़मी हिस्सा हैं। दौलत की फ़रावानी, गुनाह की लज़्ज़त और ऐश व इश्रत की रंगीनी ने आमाले सालेहा को एक सानवी हैसियत दे दी थी, जिसका क़ौमी और इन्फ़रादी ज़िन्दगी पर यह असर था कि बदी आम थी और गुनाह अपनी तमाम-तर हश्र सामानियों और नुमाइशी दिल आवेज़ियों के साथ आज़ाद व बे-क़ैद था।

दौरे इहयाए दीन

इन बिगड़े हुए हालात व वाक़िआत की इस्लाह के लिये एक ऐसे मसीहा नफ़्स की ज़रूरत थी जिसकी कुव्वत की तग व ताज़ (दौड़ धूप) सिर्फ़ इल्मी मू-शगाफ़ियों, फ़ल्सफ़ियाना तौजीहों और फ़िक़्ही नुक्ता आराइयों तक ही महदूद न हो, बल्कि बसीरत व रूहानियत की हदों को भी छूती हो और उस में इश्क़ की सरमस्ती और मारिफ़त व आगही की वह बर्क़ी रौ भी हो जो मुर्दा दिलों को ज़िन्दगी बख़्शती और तागूती ताक़तों को जला कर ख़ाकस्तर कर देती हो। इस काम के लिये मशिय्यते ऐज़दी ने जनाबे ग़ौसुल आज़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बतौरे ख़ास तय्यार किया और दीन की तजदीद व तक़्वियत और मिल्लत के इहया का एज़ाज़ अता करने के लिये इब्तिदा ही से आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तर्बियत और मुआवनत फ़रमाई।

ग़ैबी तर्बियत

वाक़िआत से पता चलता है कुदरत ने आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस मक़सद के लिये चुन लिया था और आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुहिय्युद्दीन बनाना मक़सूद था। यह वाक़िआत ज़मानए तालिबे इल्मी से लेकर उस दौर तक फैले हुए हैं जब आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

बग़दाद में दाख़िल होकर तख़्ते करामत पर जल्वा फ़रमा हुए और मुक़ाबले में आने वाली माद्दी क़ुव्वतों को पाश पाश कर दिया।

उन वाक़िआत का तज़किरा बाइसे सआदत व बसीरत और इस नतीजे तक पहुंचने में काफ़ी मददगार है कि आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तर्बियत में दस्ते क़ुदरत कार-फ़रमा था। चुनान्चे चन्द वाक़िआत व शवाहिद पेश किये जाते हैं ताकि यक़ीन हो कि वाक़ई अल्लाह तआला ने अपने दीन के इहया के लिये जिस हस्ती को मुन्तख़ब फ़रमाया वह वाक़ई इस लायक़ है कि उन्हें तसलीम किया जाए कि आप हैं मुहिय्युद्दीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

सच्चाई की बरकत

चन्द अफ़राद पर मुश्तमल एक मुख़्तसर सा क़ाफ़िला बग़दाद की जानिब आज़िमे सफ़र है। इस क़ाफ़िले में एक नौ-उम्र बच्चा भी अपनी वालिदा की इजाज़त से तलबे इल्म के लिये जा रहा है। जब यह क़ाफ़िला मक़ामे हमदान से आगे निकलता है तो डाकुओं का एक गिरोह उस पर हम्ला-आवर होकर लूट मार का बाज़ार गर्म कर देता है। एक डाकू उस बच्चें के क़रीब आकर पूछता हैः ''ऐ लड़के! तेरे पास भी कुछ है।'' आम रिवायत के ख़िलाफ़ वह नौ-उम्र बच्चा अपनी सद्री (सीना बंद) में सिले हुए चालीस दीनारों का इन्किशाफ़ करता है। डाकू उसे मज़ाक़ समझते हुए बग़ैर किसी तअर्रुज़ के आगे बढ़ जाता है लेकिन जब हर पूछने वाले डाकू को बच्चे की तरफ़ से यही जवाब मिलता है तो तहक़ीक़ व सदाक़त के लिये उसे डाकुओं के सरदार के पास ले जाया जाता है। डाकुओं का सरदार उस नौ-उम्र बच्चे की हक़ गोई से मुतास्सिर होकर इस्तफ़सार करता है कि ऐ लड़के! तू झूट बोल कर अपने दीनार बचा सकता था लेकिन तू ने ऐसा नहीं किया। इसकी क्या वजह है? उस लड़के ने बताया कि मेरी माँ ने मुझ से हर हालत में सच बोलने का वादा लिया है। चुनान्चे मैंने उसी वादे पर क़ायम रहने के लिये सच बोला है। इस हक़ गोई का डाकुओं पर गहरा असर हुआ। डाकू यह सोचने पर मजबूर हो

गए कि एक बच्चा तो अपनी माँ की ना-फ़रमानी नहीं करता लेकिन हम किस क़दर बद-बख़्त हैं कि मुद्दत से अपने ख़ालिक़ व मालिक की हुक्म अदूली में मसरूफ़ हैं। चुनान्चे वह तौबा करके राहे रास्त इख़्तियार कर लेते हैं। वह बच्चा जिसके आला किरदार की एक मामूली सी झलक ने डाकुओं और लुटेरों की ज़िन्दगी में इन्क़लाब बरपा करके न सिर्फ़ उन्हें अज़ाबे इलाही से बचाया बल्कि सैंकड़ों ख़ानदानों को अमन व सुकून की दौलत से माला-माल किया, यह वही बच्चा था जिस को आज दुनिया ग़ौसुल आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नाम से पहचानती है। जिनकी शख़्सियत का एक मुख़्तसर ख़ाका यह है कि हुसूले इल्म की ख़ातिर आब्ला पाई, सलामती ईमान के लिये नफ़्स कुशी और दुनिया की तमाम लज़्ज़तों से बे-रग़बती और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की किब्रियाई का इक़रार करने के लिये हर माद्दी ताक़त की नफ़ी, ग़रीबों और बेकसों की महफ़िल में बाप और भाई से ज़्यादा शफ़ीक़, मेहरबान, भूकों को अपने दहन का लुक़्मा अता करने वाले, नंगों को अपना पैरहने मुबारक बख़्श देने वाले, उमरा के दरवाज़ों की तरफ़ से पीठ कर लेने वाले, बज़्मे अहबाब में सबा सुख़न, शीरीं कलाम, दरबारे ख़िलाफ़त में शम्शीरे बे-नियाम। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को चूंकि क़ुदरत ने दीने इस्लाम को दोबारा ज़िन्दा करने का मन्सबे जलीला अता करना था जो कि आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पैदाइश का अस्ल मक़सद था, इसी लिये एक मर्तबा आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खेत में हल चला रहे थे कि हातिफ़े ग़ैब से निदा आईः ''ऐ अब्दुल क़ादिर! तुम्हें क़ुदरत ने बैल हांकने और हल चलाने के लिये पैदा नहीं किया है।'' चुनान्चे आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह आवाज़ सुनते ही हल छोड़ कर ज़मीन पर बैठ गए और इस मक़सद और इसी सोच में आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने घर की राह ली। घर में धड़कते हुए दिल के साथ दाख़िल हुए। माँ ने बेटे को घबराया हआ देख कर वजह पूछी तो बेटे ने तमाम वाक़िआ कह सुनाया। माँ वाक़िआ सुनने के बाद कुछ देर ख़ामोश रही

और फिर धीमी आवाज़ से कहाः बेटा! हातिफ़ ने सच कहा है। तुम को ख़ुदा ने बैल हांकने और हल चलाने के लिये नहीं पैदा किया। ख़ुदा ने तुम से कोई बहुत बड़ा काम लेना है, जिसे अंजाम देने के लिये तुम्हें हर वक़्त तय्यार रहने की ज़रूरत है।

तालीमी सफ़र

आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस आला मक़सद की तय्यारी (तालिबे इल्मी) की ख़ातिर बग़दाद जाने का इरादा किया। चूँकि आप की वालिदा माजिदा को शुरू ही से आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को दीनी तालीम दिलाने का ख़्याल था, इसलिये आप को इजाज़त दे दी गई और यह समझते हुए भी कि जीते जी अब दोबारा अपने लख़्ते जिगर से मुलाक़ात ना-मुमकिन है (चुनान्चे ऐसा ही हआ)। ज़ईफ़ुल उम्र माँ ने अपने बेटे को अक़लीमे इल्म व इरफ़ान का सुल्तान बनने की ख़ातिर सदमए फ़ुर्क़त बर्दाश्त किया और आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहसीले इल्म के लिये बग़दाद की जानिब रवाना हुए। चार सौ मील से ज़ायद का ख़तरनाक सफ़र तए करके आप बग़दाद में रौनक़ अफ़रोज़ हुए और अइम्मए अअ़लाम व उलमाए इज़ाम से इस्तिफ़ादा फ़रमाने लगे। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पहले क़ुरआने करीम रिवायत व दरायत और क़िरात से पढ़ा, फिर फ़िक़्ह, उसूले फ़िक़्ह, इल्म व अदब और इल्मे हदीस के लिये वक़्त के मुमताज़ उलमा के सामने ज़ानुए तलम्मुज़ तह किया। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के असातज़ा में अबुल वफ़ा, अली बिन अक़ील, अबू ग़ालिब, मुहम्मद बिन हसन बाक़लानी, अबुल क़ासिम अली बिन करख़ी, अबू ज़करिया यहया बिन अली तब्रेज़ी जैसे नामवर उलमा और मुहद्दिसीन शामिल थे। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम)

इल्मी मुजाहिदा

तहसीले उलूम में आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सख़्त तकालीफ़ का सामना हुआ। बग़दाद पहुंचते ही फ़क्र व फ़ाक़ पेश आया। वालिदा के दिये हुए चालीस दीनार बग़दाद जैसे अज़ीम शहर में कब तक किफ़ायत

कर सकते थे। इन्तिहाई किफ़ायत शुआरी के बावुजूद आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जेब जल्द ही ख़ाली हो गई। दो साल का अरसा इसी तरह गुज़र गया, हत्ता कि बग़दाद के गर्द व नवाह में सख़्त क़हत पड़ गया। लोग रोटी के एक एक टुकड़े को तरसने लगे। इन्ही फ़ाक़ा मस्तियों और उसरत में आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आठ बरस तक मदरस-ए-निज़ामिया में इल्म हासिल करते रहे और बिल-आख़िर एक दिन ऐसा आया कि आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सर पर दस्तारे फ़ज़ीलत बाँधी गई।

रूहानी जज़्बा

ज़ाहिरी उलूम की तहसील से फ़राग़त के बाद आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस सोच में पड़ गए कि यह सब तग व दौ (दौड़ धूप) जो मैंने की है, आख़िर किस मक़सद के लिये है? इस में शक नहीं कि इल्म ने मेरी रहबरी की, मुझे रास्ता दिखाया, लेकिन मंज़िल कहाँ है? काश मुझे वह ताल्लुक़ बिल्लाह नसीब होता जो मेरे नाना अब्दुल्लाह सोमई को नसीब था। मुझे वह ज़ौक़ व शौक़ अता होता जो मेरे वालिदे मोहतरम को ख़ुदा ने अता किया था, मुझे वह क़ुर्बते इलाही नसीब होती जो मेरी फूफी को हासिल थी।

आख़िर आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुजाहिदात व रियाज़ात में मशग़ूल होने की ठानी चुनान्चे ११०२ ई० से ११२७ ई० तक पच्चीस साल की तवील मुद्दत ऐसे ऐसे मुजाहिदे और रियाज़तें कीं कि उनका तसव्वुर करके ही इन्सान कांप उठता है। कोई सख़्ती और मुसीबत ऐसी न थी जो आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस दौर में बर्दाश्त न की हो। पच्चीस साल के सख़्त और होलनाक मुजाहिदात के आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने शैख़ुश शुयूख़ अबू सईद मख़ज़ूमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर होकर बैअत का शर्फ़ हासिल किया।

मस्नदे इरशाद

उलूमे ज़ाहिरी और बातिनी नेज़ मुजाहिदात व रियाज़ात से फ़राग़त के

बाद आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्नदे इरशाद व इस्लाह पर मुतमक्किन हुए। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने बड़े बड़े फ़ुसहा व बुलग़ा उलमा की ज़बानें गंग होती थीं। अवामुन्नास के अलावा उस दौर के मशाइख़ भी वअज़ में बिल-इल्तिज़ाम शरीक होते थे। बाज़ औक़ात वअज़ में शाने जलालत भी पैदा हो जाती थी, जिस पर आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमातेः ''लोगों के दिलों पर मैल जम गया है।''

तालिबे इल्मी के दौर का एक और वाक़िआ

ग़ौसुल आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं: ''तालिबे इल्मी का दौर बड़ा होश-रुबा और संगीन था, बड़ी उसरत और तंग-दस्ती की हालत में दिन गुज़रते थे, बाज़ औक़ात लगातार फ़ाक़े आते, खाने के लिये कुछ भी न मिलता मगर उस हालत में भी इस्तक़लाल का दामन हाथ से न छूटता था। मैं हर तकलीफ़ और परेशानी को बड़े सब्र के साथ सहारता और यह तसव्वुर करके कि इन हालात के पीछे क़ुदरत का हाथ है, ज़बान से कुछ न कहता।''

एक दफ़ा लगातार फ़ाक़े आए, फिर क़ुदरत ने ख़ुद क़ुव्वते ला-यमूत का इन्तिज़ाम फ़रमाया मगर साथ ही मेरे लिये एक रूहानी दर्स का भी इन्तिज़ाम कर दिया। हुआ यूँ कि हल्वा पुरी कहीं से अचानक मयस्सर आ गई चूँकि सख़्त भूक लगी हुई थी इसलिये लेकर मस्जिद में आ गया और मेहराब में बैठ कर उसे सामने रख लिया। अभी खाने के लिये हाथ बढ़ाया ही था कि एक ग़ैबी तहरीर नमूदार हुई इबारत यह थी:

''पहली किताबों में बताया गया है ख़ुदा के शेर लज़्ज़तों के ताबेअ़ नहीं होते, वह शिकम परस्ती और ख़्वाहिशों की पैरवी नहीं करते, उन्हें आरिज़ी लज़्ज़तों और ज़बान के चटख़ारों के साथ कोई सरोकार नहीं होता।''

जब मैंने यह ग़ैबी तंबीह आँखों से देखी तो फ़ौरन खाने से हाथ खींच लिया। खाना वहीं छोड़ा और दो नफ़्ल रक्अत पढ़ कर वापस आ गया।

बाज़ औक़ात अचानक ग़ैबी इमदाद से बड़ी तसल्ली और तस्कीन

नसीब होती थी और फ़क्र व फ़ाक़ा के बावुजूद किसी क़िस्म की बेचैनी और परेशानी महसूस नहीं होती थी।

तंग दस्ती के उसी ज़माने में ग़ैबी इशारा हुआ कि दुकान से रोटी ले लिया करो, उजरत की अदायगी का इन्तिज़ाम हम कर देंगे। चुनान्चे ऐसा ही हुआ। काफ़ी अरसे बाद हुक्म हुआ फ़ुलाँ जगह सोने की डली है वह उठा कर उजरत के तौर पर दुकानदार को दे दो। मैंने डली वहाँ पाई और दुकानदार को दे दी।

क़ुदरते कामिला अपने महबूब बंदे के लिये सोने चाँदी के ढेर लगा सकती थी मगर यह तर्बियत और तज़्किया का दौर था। इसी लिये ऐसी सहूलतें आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये बिल्कुल मुहय्या न की गईं बल्कि अगर कम उम्री और नादानिस्तगी की वजह से आप की तबियत उधर माइल होती तो फ़ौरन शान के ख़िलाफ़ इक़दाम से रोक दिया जाता और आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फिर मंज़िले मक़सूद की तरफ़ लौट आते।

चुनान्चे एक दफ़ा तलबा ने आपस में तए किया कि ''बअ़क़ूबा'' जाकर वहाँ के मतमूल ज़मीनदारों से गंदुम लाएं। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी आमादा हो गए मगर रास्ते में एक शख़्स मिला, उस ने पास बुला कर कहाः ''साहिबज़ादे! जो तालिबे हक़ और नेक बख़्त हों वह किसी के आगे दस्ते सवाल दराज़ नहीं करते। तुम्हारी यह शान नहीं कि किसी से माँगो।'' यह सुन कर आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़ौरन वापस तशरीफ़ ले आए और फिर कभी किसी से सवाल न किया।

रियाज़त व मुजाहिदा

फ़राग़त के बाद आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुहब्बते इलाही की लगन में बयाबानों की तरफ़ निकले। पहले दौर में इश्क़ की चिंगारी सुलग रही थी वह शोअ़ला ज्वाला बन गई और आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उसके लिये हर चीज़ को ख़ैरबाद कह दिया। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुस्तक़बिल क़रीब में जो काम अंजाम देना था उसका भी यही

तक़ाज़ा था कि आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कश्फ़ व वजदान की नज़ाकतों से आगाह और बातिनी क़ुव्वतों से आरास्ता होकर मैदान में आएं ताकि जिन तागूती ताक़तों से निपटना है, उनके मुक़ाबले के वक़्त दुश्वारी पेश न आए और आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सब को चित कर सकें। ग़ैर मरई, शैतानी और इब्लीसी क़ुव्वतों ने भी जब आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़ौक़ व शौक़ और रूहानी तरक़्क़ी का यह आलम देखा तो वह भन्ना उठीं। उन्हें मुस्तक़बिल क़रीब में अपनी मौत का मंज़र साफ़ नज़र आने लगा। उन्हें यह सोचने में देर न लगी कि जो शख़्स आज बयाबानों में इस लगन के साथ मसरूफ़े अमल है वह उनके लिये पैग़ामे मौत है। बदी की जिन क़ुव्वतों को उन्हों ने रिवाज दिया है और अवाम में जिन क़बाहतों को जन्म दिया है यह उनका मिटाने वाला है और अगर यह इसी तरह सरगर्मे अमल रहा तो बहुत जल्द दीन को बालादस्ती और फ़ौक़ियत हासिल हो जाएगी। इसलिये अभी से इस का नातिक़ा बंद कर देना चाहिये ताकि कल यह हमारा नातिक़ा बंद कर सकने के क़ाबिल न हो सके और दीन के जस्दे नातवाँ में हयाते ताज़ा फूंकने की सलाहियत व अहलियत हासिल न कर सके।

चुनान्चे उन ग़ैर मरई ताक़तों ने आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ से ज़बरदस्त ख़तरे के पेशे नज़र महसूस और मरई सूरत में आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने आकर मुक़ाबला करने की ज़रूरत महसूस की और आप को तंग करने का मन्सूबा बनाया, ताकि परेशान होकर आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह मैदान छोड़ दें और हिम्मत हार कर पीछे हट जाएं और दीन की वह क़दरें उसी तरह पामाल होती रहें जो इन्सानियत का ज़ेवर और रूहानियत की मेअ्राज हैं।

(१) हज़रत महबूबे सुब्हानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक मर्तबा दूर उफ़क़ पर नूर का एक तख़्त बिछा हुआ देखा जिससे रूपहली रौशनी फूट रही थी। वह तख़्त नज़्दीक आता गया और फिर उससे आवाज़ आईः ''अब्दुल क़ादिर! मैं तेरा ख़ुदा हूँ, तूने बंदगी का हक़ अदा कर दिया। मैं

तुम से ख़ुश हूँ और हराम चीज़ें तुम्हारे लिये हलाल करता हूँ। मज़ीद तुम्हें किसी इबादत की भी ज़रूरत नहीं क्योंकि तुम ने मुझे राज़ी कर लिया।''

आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़ौरन लाहौल पढ़ी। दफ़्अतन एक चीख़ बुलन्द हुई और चारों तरफ़ तारीकी छा गई। इब्लीस हाथ मलता हुआ आया कि अब्दुल क़ादिर! तुम अपने इल्म की वजह से बच गए हो, वरना मैंने बड़ों बड़ों पर यह हरबा आज़माया है और उन्हें सरे मैदान पछाड़ा है।

आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बरजस्ता फ़रमायाः ''ज़ालिम! तू दूसरा वार कर रहा है। मैं अपने इल्म की वजह से नहीं बल्कि अपने रब के फ़ज़्ल से महफ़ूज़ रहा हूँ, दूर होजा।''

(२) मुस्तक़बिल क़रीब में रूनुमा होने वाले अज़ीम इन्क़लाब को नाकाम बनाने के लिये जहाँ तागूती और इब्लीसी ताक़तें ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रास्ते में काँटे बिखेर रही थीं, वहाँ कुछ महबूब और मुरब्बी अहबाब इस इन्क़लाब को कामयाब बनाने के लिये आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सख़्त तर्बियती मराहिल से गुज़ार रहे थे। यह नफ्सियाती नुक़्तए निगाह से आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कोहे हिलम व वक़ार और मुस्तक़िल मिज़ाज बनाने के लिये ज़रूरी था ताकि हर तजर्बे की भट्टी से आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कुंदन बन कर निकलें और जामेअ् औसाफ़ शख़्सियत के रूप में सामने आएं।

चुनान्चे हज़रते हमाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हौसला शिकन, सर्द मुहरी, डाँट डपट इस सिलसिले की नुमायाँ कड़ी है। वह सब के सामने झिड़कते कि अब तक कहाँ थे, तुम्हारे लिये हम ने खाना नहीं रखा, फ़क़ीहे आज़म फ़क़ीहों के पास जाओ हम से क्या लेना है वग़ैर वग़ैरा। तालिबे इल्मों ने जब उस्ताज़ का यह सुलूक देखा तो उन्हों ने भी पर पुरज़ें निकाले और आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मज़ाक़ उड़ाना शुरू कर दिया। हज़रत हमाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पता चला तो आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें फ़रमायाः ''नालायक़ो! तुम क्या

जानो अब्दुल क़ादिर क्या चीज़ है? मैं तो उसकी बातिनी तर्बियत के लिये यह सुलूक करता हूँ क्योंकि यह उसकी रियाज़त का ज़माना है, वगरना मुस्तक़बिल में यह आफ़ताब बन कर चमकेगा और तमाम चराग़ उसकी ताबानी के सामने मांद पड़ जाएंगे, तुम उसकी अज़्मत को क्या जानो।''

इन तमाम हालात व वाक़िआत, रब्बानी ताईदात और दस्तगीरियों से पता चलता है कि कुदरत ने आप को इहयाए दीन और इस्लाहे अहवाल के लिये बतौरे ख़ास तय्यार किया और जब आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अमली मैदान में तशरीफ़ लाए तो बातिल के अंधेरे, शैतान के दाव और गुनाह के जाल सब तार तार हो गए।

तजदीद व इहयाए दीन

जब आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इल्म व इरफ़ान और तक़्वा व मारिफ़त की तमाम मनाज़िल तए कर लीं और आला पैमाने पर इरशाद व इस्लाह का मन्सब संभालने के क़ाबिल हो गए और उस कमाल को छू लिया जिसके लिये आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तय्यार किया जा रहा था तो रब्बानी इशारा हुआ ''बग़दाद जाओ और मख़्लूक़े ख़ुदा को सिराते मुस्तक़ीम दिखाओ, जो भटक कर नापसंदीदा राहों पर ठोकरें खा रही है और ख़ुदा और रसूल से अपना रिश्ता तोड़ चुकी है।'' यह हुक्म पाकर आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बग़दाद की तरफ़ रवाना हो गए। जब एक हादी और रहनुमा की हैसियत से आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अवाम के अफ़आल व मशाग़िल का जाइज़ा लिया और हर तरफ़ फ़िस्क़ व फ़ुजूर, ख़ुद ग़र्ज़ी और हवस के सियाह साए हरकत करते देखे तो उकता गए। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नफ़ीस व जमील दिल माहौल की गंदगी से घबरा गया, उसी वक़्त क़ुरआने पाक बग़ल में दबाया और उन्ही बयाबानों को दोबारा रौनक़ बख़्शने का इरादा फ़रमाया जहाँ से तशरीफ़ लाए थे। मगर उसी लम्हे हुक्म हुआ अब्दुल क़ादिर! यहीं रह कर मख़्लूक़े ख़ुदा को हिदायत का सबक़ पढ़ाओ और बरकात से संभाला दो। अर्ज़ की मुझे इस माहौल से घिन आती है, अपने दीन के ज़ाए होने का ख़तरा है।

तसल्ली दी गई कि दीन के मुहाफ़िज़ हम हैं, इसलिये बे-ख़तर अपना काम शुरू करो। चुनान्चे तसल्ली पाकर आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बग़दाद में क़ियाम फ़रमाया।

दीन की तजदीद और इहया के रास्ते में रुकावटें पैदा करने वाले उमूमन ऐश व इश्रत के दिल-दादा, दौलत-मंद उमरा, हुक्मरान या ग़लत फ़िक्र व नज़र वाले लोग होते हैं जो ज़हनी कज रवी और ग़लत अंदेशी की वजह से ना-सवाब को सवाब (नेकी) समझ कर दीन का काम करने वाले के लिये मुश्किलें ढूँडते और परेशानी के असबाब तलाश करते हैं और उसे दिल-जमई से अपने फ़राइज़ सर-अंजाम नहीं देने देते।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ भी यही सुलूक हुआ लेकिन ''الاستقامة خير من الف الكرامة'' मशहूर मक़ौला हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर सौ फ़ीसद सादिक़ आता है। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़िरऔनाने दौर की परवाह किये बग़ैर वह कारनामा सर-अंजाम दिया कि अपनी ज़िन्दगी में ही एक कोने से दूसरे कोने तक इस्लाम का नाम रौशन फ़रमाया। इसी लिये आप का लक़ब ''मुहिय्युद्दीन'' भी है और आज जो हमारे हाँ इस्लाम की रौनक़ें हैं यह सदक़ा है पीराने पीर दस्तगीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का।

औलिया व मशाइख़ की अक़ीदत

''اقطابِ جهاں در پیش درت افتاده چو پیش شاه گدا''

तर्जमाः- जुम्ला जहान के अक़ताब तेरे दरबार में गदाओं की तरह पड़े हैं।

महबूबे सुब्हानी ग़ौसे आज़म हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हक़ सुब्हानहु व तआला ने बेहद हिसाब और बेशुमार ज़ाहिरी व बातिनी नेअ़मतों से नवाज़ा था। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ''انبع عليكم نعمه ظاهرة وباطنة'' के मिस्दाक़ और बज़ाते ख़ुद एक जहाँ हैं।

غوثِ اعظم درمیانِ اُولیاء   چوں محمد ﷺ درمیان انبیاء

तर्जमाः- ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दरमियान ऐसे हैं जैसे हुज़ूर ﷺ जुम्ला अंबिया अलैहिमुस्सलाम के दरमियान।

ग़ौसुस सक़लैन मुग़ीसुल कौनैन हज़रत शाहे जीलानी की जलालते शान का इस बात से अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि तमाम सलासिल के मशाइख़े किराम और आलिया अल्लाह ने आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मदह की है।

(१) ख़्वाजए ख़्वाजगान हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दन चिश्ती संजरी अजमेरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में यूँ नज़रानए अक़ीदत पेश किया है:

یاغوثِ معظم نورِ ھدی مختارِ نبی مختارِ خدا
سلطانِ دو عالم قطبِ علی حیران ز جلالت ارض و سما
در بزمِ نبی عالی شانی ستارِ عیوب مریدانی
در ملکِ ولات سلطانی اے منبع فضل و جود و سخا
چوں پائے نبی شدئے پامرت تاج ھمہ عالم شد قدمت
اقطابِ جہاں در پیش درت افتادہ چو پیشِ شاہ گدا

(२) शहंशाहे नक़्शबंद हज़रत ख़्वाजा सय्यिद बहाउद्दीन नक़्शबंद बुख़ारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मदह में यूँ रतबे लिसान हैं:

بادشاہِ ھر دو عالم شیخ عبدالقادر است
سرور اولادِ آدم شاہ عبدالقادر است
آفتاب و ماھتاب و عرش و کرسی و قلم
نورِ قلب از نورِ اعظم شاہ عبدالقادر است

(३) शैख़ुश शुयूख़ हज़रत शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप की बारगाह में इस तरह गुलहाए अक़ीदत पेश करते हैं:

"शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी बादशाहे तरीक़ और तमाम आलमे वुजूद में साहिब तसर्रुफ़ थे। करामात और ख़्वारिक़े आदात में अल्लाह

तआला ने आप को यदे तूला अता फ़रमाया था।"

(४) क़ुदवतुस सालिकीन, ज़ुब्दतुल आरिफ़ीन हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि हमआत में आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तौसीफ़ इस तरह बयान फ़रमाते हैं:

"ग़ौसे आज़म उवैसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु औलियाए इज़ाम में से राहे जज़्ब की तकमील के बाद जिस शख़्स ने कामिल व अकमल तौर पर निस्बते उवैसिया की तरफ़ रुजूअ़ करके वहाँ कामिल इस्तिक़ामत से क़दम रखा वह हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं और इसी वजह से कहते हैं कि आँ-जनाब अपनी क़ब्र शरीफ़ में ज़िन्दों की तरह तसर्रुफ़ फ़रमाते हैं।" नेज़ तफ़हीमाते इलाहिया जिल्द दोम में लिखते हैं कि हज़रत मौसूफ़ क़ुद्दिस सिर्रुहु को आलम में असर व नुफ़ूज़ का एक ख़ास मक़ाम हासिल है और उन में वह वुजूद मुन्अक्स हो गया है जो तमाम आलम में जारी व सारी है।

मुहक़्क़िक़े आज़म आरिफ़ बिल्लाह मुहद्दिसे अजल हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि हज़रत ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान व अज़मत इस तरह बयान करते हैं:

"अल्लाह तआला ने ग़ौसे आज़म को क़ुत्बियते क़ुबरा और विलायते उज़्मा का मर्तबा अता फ़रमाया है। फ़िरिश्तों से लेकर ज़मीनी मख़लूक़ तक में आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कमाल व जलाल का शोहरा था।"

मुजद्दिद अलफ़े सानी और ग़ौसे जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा

इमामे रब्बानी मुजद्दिद अलफ़े सानी हज़रत शैख़ अहमद सरहिन्दी क़ुद्दिस सिर्रुहुल अज़ीज़ हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की उलूए शान बयान करते हुए फ़रमाते हैं: "आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तस्नीफ़ मुब्दा व मआद के सफ़्हा नम्बर ११ पर तहरीर है कि उस मक़ाम तक पहुंच जाने के बाद जो अक़ताब का मक़ाम कहलाता है नबी करीम रऊफ़ुर रहीम ﷺ ने क़ुत्बियते इरशाद की ख़लअत अता फ़रमाई और इस मन्सब पर सरफ़राज़ फ़रमाया, इसके बाद इनायते ख़ुदावंदी ने

उस मक़ाम से मज़ीद बुलन्दी की तरफ़ मुतवज्जेह फ़रमाया। चुनान्चे एक मर्तबा अस्ल ज़िल्ले आमेज़ तक रसाई हासिल हुई और उस मक़ाम में भी गुज़िश्ता मक़ामात की तरह फ़ना और बक़ा नसीब हुई और फिर वहाँ से अस्ल के मक़ाम तक तरक़्क़ी अता फ़रमाई गई और मक़ामे अस्लुल अस्ल तक पहुंचाया गया। इस आख़िरी उरूज में जो कि मक़ामाते अस्ल का उरूज है हज़रत ग़ौसे आज़म कुद्दिस सर्रुहु की रूहानियत की इमदाद हासिल रही और उनकी कुव्वते नुसरत ने उन तमाम मक़ामात से गुज़र कर अस्लुल अस्ल के मक़ाम तक वासिल कर दिया।

ख़ानवादए हज़रत सय्यिद अबुल फ़रअ़ सय्यिद मुहम्मद फ़ाज़िलुद्दीन क़ादरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चश्म व चराग़ साहिबुल फ़ज़ीला अल्लामा मोहतरम हज़रत सय्यिद बदर मुहिय्युद्दीन क़ादरी मद्दा ज़िल्लहु ज़ेब सज्जादा दरबारे फ़ाज़िलया क़ादरिया फ़रमाते हैं कि हज़रत ग़ौसे आज़म फ़ुर व अफ़हम अबू मुहम्मद मुहिय्युद्दीन सय्यिद अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मदारुल फ़ुयूज़, इल्म व हिकमत के दरवाज़े वाले, ज़ियाउल अम्र, आरज़ू मंदों के इश्तियाक़ और उम्मीदों पर इनायत व करम फ़रमाने वाले, दीन को कसवते इहया पहनाने वाले और जिस किसी ने उन से रौशनी तलब की उनके लिये नूरे आलमताब साबित होने वाले, तब्लीग़े इस्लाम के उफ़क़ पर सितारे रौशन करने वाले वह सितारे जो लोगों के लिये हिदायत का बाइस हुए और सिलसिलए तरीक़त के उफ़क़ के लिये आफ़ताब व माहताब बनते हैं।

वलियों और क़ुत्बों का यह सूरज हर वक़्त चमकता रहता है और इस सूरज को कभी गहन नहीं लगता, जैसा कि आँ-जनाब ने फ़रमाया:

افلت شموس الاولین وشمسنا ابداً علیٰ افق العلیٰ لا تغرب

तर्जमाः- पहले के लोगों के सूरज ग़ुरूब हो गए और हमारा सूरज हमेशा बुलन्दी के उफ़क़ पर जल्वाताब रहेगा।

माहसल यह है कि जब तक ज़माना मौजूद है, आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हमेशा हमेशा के लिये क़ुत्बुल अक़ताब हैं।

इन्तिबाहः- एक गिरोह अब यह कह रहा है कि आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सिर्फ़ अपने ज़माने में ग़ौस थे और बस, उनकी तरदीद में मुताद्दिद तसानीफ़ शाए हो चुकी हैं। उन में एक तस्नीफ़ फ़क़ीर उवैसी ग़फ़रलहु की भी हैः "तहक़ीक़ुल अकाबिर फ़ी क़दम अश्शैख़ अब्दुल क़ादिर।"

इमाम हसन असकरी की बशारत

ख़ानवादए अहले बैत के चश्म व चराग़ हज़रत इमाम हसन असकरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी लम्हात में ख़ानदान का मुक़द्दस ख़िरक़ा अपने वारिस के हवाले किया और इरशाद फ़रमाया कि पाँचवीं सदी के आख़िर में इराक़ की सरज़मीन से एक आरिफ़ बिल्लाह का ज़ुहूर होगा जिसका नाम अब्दुल क़ादिर और लक़ब मुहिय्युद्दन होगा यह अमानत ब-हिफ़ाज़त तमाम उसको पहुंचा दी जाए चुनान्चे वह मुक़द्दस अमानत नस्ल दर नस्ल मुन्तक़िल होती रही यहाँ तक कि माहे शव्वाल ४६६ हिजरी में एक अमीने वक़्त के ज़रिये ग़ौसियत तक पहुंच गई। (महरने क़ादरिया)

करामात

औलिया अल्लाह में किसी के हिस्से में भी इतनी अज़ीम व कसीर करामात नहीं आईं जो सय्यिदिना हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मिली हैं। हज़रत शैख़ अल बिन अबी नसर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं किः "जब कोई शख़्स आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की करामत देखना चाहता, देख लेता था।"

हज़रत नूर बख़्श तवक्कली अलैहिर्रहमा ने "तज़किरा ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु" में आप की करामात के जो उनवानात क़ायम किये हैं यहाँ सिर्फ़ उन्ही को दर्ज किया जाता है ताकि कुछ अंदाज़ा हो सके।

(१) मुर्दों को ज़िन्दा करना (२) बीमारियों का दूर करना (३) बे-मौसम सेब का ग़ैब से आना (४) असा का नूर हो जाना (५) बारिश का थम

जाना और आबे दज्जला का हट जाना (६) अनाज में बरकत (७) दुआ का क़ुबूल होना (८) मुग़ीबात पर मुत्तला होना (६) क़ज़ाए हाजात (१०) दूर दराज़ फ़ासिले से मदद करना।

विसाल शरीफ़

शैख़ अबूल क़ासिम की रिवायत के मुताबिक़ हुज़ूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रमज़ान ५६० हिजरी में साहिबे फ़राश हुए, एक बा-वक़ार शख़्स ने ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर होकर कहाः ''ऐ अल्लाह के वली! अस्सलामु अलैकुम मैं माहे रमज़ान हूँ। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इस अम्र की माफ़ी चाहता हूँ जो मुझ में मुक़द्दर किया गया है और आप से जुदा होता हूँ। आप से यह मेरी आख़िरी मुलाक़ात है।

मल्फ़ूज़ाते हज़रत ग़ौसुल आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

☆ हमारी ग़ीबत करने वाले हमारे फ़लाह करने वाले हैं कि हम को ख़िराज देते हैं और अपने आमाले सालेहा हमारे आमाल नामे में मुन्तक़िल करा देते हैं।

☆ वह क्या ही बदनसीब इन्सान है जिसके दिल में जानदारों पर रहम करने की आदत नहीं।

☆ तेरे सब से बुरे दुशमन तेरे हम नशीन हैं।

☆ शिकस्ता क़ब्रों पर ग़ौर करो कि कैसे कैसे हसीनों की मिट्टी ख़राब हो रही है।

☆ जो ख़ुदा से वाक़िफ़ हो जाता है वह मख़लूक़ के सामने मुतवाज़ेअ़ हो जाता है।

☆ वअ़ज़ अल्लाह के लिये कर, वरना तेरा गुंगा पन बेहतर है।

☆ गुमनामी को पसंद कर कि इस में नामवरी की निस्बत बड़ा अमन है।

☆ जब तक कि सतहे ज़मीन पर एक शख़्स भी ऐसा रहे कि जिसका तेरे दिल में ख़ौफ़ हो या उससे किसी क़िस्म की तवक़्क़ुअ़ हो उस वक़्त तक तेरा ईमान कामिल नहीं हुआ।

☆ जब तक तेरा इतराना और गुस्सा करना बाक़ी है, उस वक़्त तक अपने आप को अहले इल्म में शुमार न कर।

☆ तन्हाई महफ़ूज़ है और हर गुनाह की तकमील दो से होती है।

☆ कोशिश कर कि गुफ़्तुगू की इब्तिदा तेरी तरफ़ से न हुआ करे और तेरा कलाम जवाब हुआ करे।

☆ दुनियादार दुनिया के पीछे दौड़ रहे हैं और दुनिया अहले अल्लाह के पीछे।

☆ मोमिन के लिये दुनिया रियाज़त का घर है और आख़िरत राहत का।

☆ मुस्तहिक़ साइल ख़ुदा का हदिया है, जो बंदे की तरफ़ भेजा जाता है।

☆ तू नफ़्स की तमन्ना करने में मसरूफ़ है और वह तुझ कोबरबाद करने में।

☆ जिस ने मुख़लूक़ से कुछ मांगा, वह ख़ालिक़ के दरवाज़े से अंधा है।

☆ तुझ जैसे हज़ारों को दुनिया ने मोटा ताज़ा किया और फिर निगल गई।

☆ तेरी जवानी तुझ को घोका न दे, यह अनक़रीब तुझ से ले ली जाएगी।

☆ अफ़लास पर रज़ामंदी बेहद सवाब है।

☆ रहमत को लेकर क्या करेगा, रहीम को हासिल कर।

☆ जिसका अंजाम मौत है, उसके लिये कौन सी ख़ुशी है

☆ मौत को याद रखना नफ़्स की तमाम बीमारियों की दवा है।

☆ मोमिन को सोना उस वक़्त तक ज़ेबा नहीं जब तक अपना वसियत नामा अपने सिरहाने न रख ले।

☆ अल्लाह की इताअत क़ल्ब से होती है क़ालिब से नहीं।

☆ जो कोई गुनाह करने के वक़्त अपने दरवाज़े बंद कर लेता है

और मख़लूक़ से छुप जाता है और ख़लवत में ख़ालिक़ की नाफ़रमानी करता है तो हक़ तआला फ़रमाता है ऐ इब्ने आदम! तुने अपनी तरफ़ देखने वालों में सबसे ज़्यादा मुझ को ही कमतर समझा कि सबसे तो पर्दा करना ज़रूरी समझता है और मुझ से मख़लूक़ के बराबर भी शर्म नहीं करता।

☆ ऐ अमल करने वालो इख़लास पैदा करो, वरना फ़ुज़ूल मशक़्क़त है।

☆ ताअते ख़ुदावंदी को लाज़िम कर, न किसी से ख़ौफ़ कर न तमअ रख, सारी हाजतें हक़ तआला के हवाले कर, उसी से मांग और उसके सिवा किसी पर भरोसा न रख।

☆ लोगों के सामने मुअज़्ज़ज़ न बना करो, वरना अफ़लास के ज़ाहिर करने के सबब से लोगों की नज़रों में गिर जाएगा।

☆ अमीरों के साथ तू इज़्ज़त और ग़लबा से मिल और फ़क़ीरों से आजिज़ी और फ़रोतनी के साथ।

☆ मख़लूक़ की मुहब्बत उनकी ख़ैर ख़्वाही है।

☆ मौत से पहले याद ख़ुदा में इज़्ज़त है, लोगों के काटने के वक़्त हल चलाना और बीज बोना बे-सूद है।

☆ हंसने वालों के साथ हंसा मत कर, बल्कि रोने वालों के साथ रोया कर।

☆ किसी की दुशमनी या कीना के ख़्याल में एक रात भी न गुज़ार।

दुनिया में कौन सा इन्सान है जिसे दुनिया में रह कर परेशानी पेश न आती हो। हर फ़र्द किसी न किसी मुश्किल में गिरफ़्तार है। अल्लाह वाले तो तसलीम व रज़ा के पैकर होते हैं, इसी लिये वह सब्र से काम लेते हैं। अवाम असबाब को तलाश करते हैं, अवाम की मुश्किलात का हल ''ग्यारह क़दम'' का अमल है। यह मिन-जुम्ला उन असबाब से है जिन से इन्सान के मुश्किल से मुश्किल उमूर आसान हो जाते हैं। इस रिसाले में फ़क़ीर उवैसी ग़फ़रलहु ने न सिर्फ़ ग्यारह क़दम का अमल और उसका तरीक़ा अर्ज़ किया है बल्कि ग्यारह क़दम और उसके तरीक़े के मुन्किरीन

के एतिराज़ात के जवाबात क़ुरआन व हदीस की रौशनी में अर्ज़ किये हैं। अहले इस्लाम के लिये यह बेहतरीन तोहफ़ा है।

गर क़ुबूल अफ़्तद ज़हे इज़्ज़ व शर्फ़

मुन्किरीन के हर्बे

वज़ीफ़ा ''ياشيخ عبدالقادر الجيلانی شيأً لله'' सूफ़िया किराम में अरसए दराज़ से मुरव्वज है और अल्हम्दु लिल्लाह इस वज़ीफ़े की बरकत से बहुत बड़ी मुश्किलात हल होती हैं। इसे मुख़ालिफ़ीन शिर्क व कुफ़्र समझते हैं और हर मुमकिन में इसे ग़लत क़रार देते हैं। यहाँ तक बुहतान तराशने और इबारात में तहरीफ़ से नहीं चूकते। मसलन

(१) अबुल हसन नदवी ने अवाम को बदज़न करने के लिये लिख मारा कि यह वज़ीफ़ा करने वाले क़िब्ला रुख़ तब्दील करके बग़दाद की तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़ते हैं। यह सरीह बुहतान है, क्योंकि सलातुल असरार पढ़ने वाले जानते हैं कि दोगाना पढ़ते वक़्त हम क़िब्ला रुख़ नमाज़ पढ़ते हैं, लेकिन वज़ीफ़ा पढ़ते वक़्त बग़दाद की तरफ़ मुंह करते हैं। लेकिन बुहतान तराश को क्या कहा जाए, हाँ अल्लाह तआला का पैग़ाम सुना देते हैं: ''انما يفترى الكذب الذين لا يومنون۔''

(२) तक़्वियतुल ईमान का एक पुराना नुस्ख़ा मेरे पास मौजूद है जो कि फ़ख़रुल मताबेअ़ लखनऊ का छपा हुआ है, उसके सफ़्हा ४८ पर इबारत यूँ है: यह जो लोगों में एक ख़त्म मशहूर है कि उस में यूँ पढ़ते हैं: ''ياشيخ عبدالقادر الجيلانی شيأً لله'' यानी ''ऐ शैख़ अब्दुल क़ादिर! दो तुम अल्लाह के वास्ते'' यह लफ़्ज़ न कहना चाहिये। हाँ अगर यूँ कहे कि या अल्लाह! कुछ दे शैख़ अब्दुल क़ादिर के वास्ते तो फिर बजा है।

अब देखें हाथ की सफ़ाई वालों का कमाल। उन्हों ने इसी किताब तक़्वियतुल ईमान को वली मुहम्मद ऐंड संस्ज़ ताजिराने कुतुब मिल्ज़ स्ट्रीट पाकिस्तान चौक कराची ने शाए किया, उसके सफ़्हा ५७ पर मज़कूरा बाला इबारत को इन लफ़्ज़ों में तोड़ा मोड़ा है और तहरीफ़ की ''लोगों में एक ख़त्म मशहूर है जिस में यह कलिमा पढ़ा जाता है कि ''ياشيخ عبدالقادر

"الجیلانی شیاً للہ" यानी ऐ शैख़ अल्लाह के वास्ते हमारी मदद पूरी करो। शिर्क है और खुला हुआ शिर्क है।

(३) एक दीगर बहादुर ने इमाम सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि की किताब के हवाले को तर्जमा में तब्दीली की कोशिश की यानी हज़रत अल्लाम जलालुद्दीन सुयूती साहब की किताब "الرحمہ فی الطب والحکمۃ" तबअ सानी मतबूआ मिस्र के सफ़्हा नम्बर २७६ की सतर नम्बर एक से शुरू करदा एक तरीक़ा बराए हाजत बरारी में यूँ दर्ज है कि हाजत मंद रू-ब-क़िब्ला होकर सूरए फ़ातिहा, आयतल कुर्सी और अलम नश्रह पढ़ने के बाद इसका सवाब जनाबे ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रूह पुर फ़ुतूह को हदियतन पेश करे और ग्यारह क़दम मश्रिक़ की तरफ़ चले (क्योंकि बग़दाद शरीफ़ मिस्र से ब-जानिब मश्रिक़ है) फिर फ़रमाया कि "ینادی یاسیدی عبدالقادر عشر مرات ثم تطلب حاجتک۔" फिर निदा करे "या सय्यिदी अब्दुल क़ादिर (११ मर्तबा) फिर अपनी हाजत तलब करे।

उस बहादुर मुतर्जम ने मुन्दर्जा बाला किताब का तर्जमा करते वक़्त मज़कूर का यूँ तर्जमा किया "जो शख़्स अपनी मुराद पूरी करनी चाहे रू-ब-क़िब्ला होकर आयतल कुर्सी और अलम नश्रह पढ़ कर इसका सवाब सय्यिदिना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी की रूह पुर फ़ुतूह को बख़्शे और मश्रिक़ की तरफ़ ११ क़दम चल कर या सय्यिदी अब्दुल क़ादिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पुकारे फिर दुआ मांगे। (नाम किताबः मुकम्मल मुजर्रबाते सुयूती, मतबअ मलिक ग़ुलाम मुहम्मद ऐंड सन्ज़, कशमीरी बाज़ार लाहौर। मुतर्ज्जिम का नाम नहीं लिखा)

नोटः- यह चन्द नमूने उनके हीलों के अर्ज़ कर दिये हैं। दरअस्ल वहाबियत सिवाए अपने बाक़ी तमाम अहले इस्लाम को मुश्रिक कहती है और उनके नज़्दीक इस्लाम सिर्फ़ वही है जो उनके हाँ मुरव्वज है। अहले इस्लाम को यक़ीन हो गया है कि वहाबियत ख़ारजियत का दूसरा नाम है, इसी लिये घबराने की ज़रूरत नहीं। ख़्वारिज ने हज़रत अली अल-मुर्तज़ा

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उनके तमाम मानने वालों को मुश्रिक का फ़तवा लगाया था, अब अगर सूफ़िया किराम और जुम्ला अहले सुन्नत अवाम को मुश्रिक कहते हैं तो कौन सी बड़ी बात है।

इसके बावुजूद फ़क़ीर इस वज़ीफ़े को शरई नुक़्तए निगाह से साबित करता है और मुख़ालिफ़ीन के जुम्ला एतिराज़ात के जवाबात भी पेश करेगा।

ان شاء اللہ تعالیٰ ثم ان شاء رسول اللہ ﷺ

ग्यारह क़दम और क़ज़ाए हाजत

(१) हज़रत इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि किताब अर-रहमत फ़ित्-तिब वल-हिकमत, सः २३४ में लिखते हैं किः

"فمن اراد ذٰلك فليسقبل القبلة وليقرأ الفاتحه وآية الكرسى والم نشرح ويهدى ثوابها لسيدى عبدالقادر ويخطو ويسير الى جهت المشرق احدیٰ عشر خطوة ينادى يا سيدى عبدالقادر بجيلانى عشر مرات ثم اطلب حاجتك۔"

जो भी कोई हाजत चाहे तो वह क़िब्ला रुख़ होकर सूरए फ़ातिहा, आयतल कुर्सी और अलम नश्रह पढ़े और उनका सवाब हुज़ूर ग़ौसे आज़म की रूहे पाक को हदिया करके और मश्रिक़ को ग्यारह क़दम चले और इस में पुकारेः ऐ सय्यिदी अब्दुल क़ादिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दस बार। इसके बाद अपनी हाजत तलब करे।

फ़वाइद

(१) यह किताबुत तिब इमाम सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि की तसानीफ़ से यक़ीनन है, बारहा उनके नाम से मन्सूब होकर शाए हुई है, उनकी तसानीफ़ में इसका ज़िक्र है किसी को इसका इन्कार नहीं हो सकता।

नोटः- मिस्र से बग़दाद ब-जानिब मश्रिक़ है और हिन्द पाक ब-जानिब मग़रिबे शुमाल यानी क़िब्ला से थोड़ा सा शुमाल की जानिब।

(२) इमाम सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि को बरेलवी अहले सुन्नत

कसरहुमुल्लाह अपना मुक़्तदा मानते हैं और देवबंदी वहाबी न मानें तो उनकी बद-क़िस्मती है, वरना वह उनके भी इमाम न सही उस्ताद ज़रूर हैं।

(३) कुछ न मानें, उनके न मानने से उनकी शख़्सियत में कमी नहीं आती। जब अनवर कशमीरी लिख चुका है कि यह वह बुज़ुर्ग हैं जिन्हें बेदारी में हुज़ूर सरवरे आलम ﷺ की ३२ मर्तबा ज़ियारत हुई। (फ़ैज़ुल बारी)

(४) बताइये जिसे हुज़ूर सरवरे आलम ﷺ की बेदारी में ज़ियारत नसीब हो, वह अल्लाह के नज़्दीक कितना बुलन्द मर्तबा शख़्सियत होगी और उनका अक़ीदा और अमल कभी ग़लत नहीं हो सकता, बल्कि ख़ुद हुज़ूर ﷺ ने उन्हें शैख़ुस सुन्नत (अल-हदीस) का लक़ब अता फ़रमाया। (अनवारुल बारी शरह बुख़ारी, बिजनौर का अहमद रज़ा देवबंदी)

(५) कितना ही कोई इस हवाला की तावील करे शिर्क फिर भी साबित न होगा तो लाज़मन मुबाह साबित होगा। (व हुवल मुराद)

(६) इमाम सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि का मश्रिक़ बोलना हक़ है, इसलिये कि मिस्र से इराक़ मश्रिक़ को है और हिन्द व पाकिस्तान से क़िब्ला रुख़ थोड़ा सा शुमाल को मुड़ कर ग्यारह क़दम, क़दम चलेंगे।

(२) फ़वाइदुल अज़्कार में लिखा है कि बाद अदाए दोगाना ग्यारह क़दम तरफ़ इराक़ के जाए और हर क़दम पर شیخ الثقلین یا قطبِ ربانی یا غوثِ صمدانی اغثنی पढ़े, बाद दोनों हाथ बांध कर खड़ा हो जाए और तसव्वुर हाज़िरी रौज़ए आँ-हज़रत ﷺ करे और ग्यारह मर्तबा दुरूद शरीफ़ और उसी क़दर सूरए फ़ातिहा और उसी क़दर सूरए इख़लास और उसी क़दर यह दुआ पढ़ेः یا شیخ الثقلین یا قطبِ ربانی یا غوثِ صمدانی حضرت میر سید ابو محمد شیخ عبد القادر جیلانی الحسنی الحسینی الحنبلی الشافعی اغثنی وامدونی فی قضاء حاجتی یا قاضی الحاجات۔ फिर उलटे क़दमों पीछे हट कर मुसल्ले पर आए और बैठ कर पढ़े یاھا یاھو یاھی फिर एक दफ़ा सूरए फ़ातिहा पढ़ कर बर रूहे पाक ग़ौसिया और वालिदा

शरीफ़ा आँ-हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बख़्शे और हाजत ख़ुदा से चाहे।

(३) असलाफ़ सालेहीन रहिमहुमुल्लाहि तआला से लेकर ता-हाल तजर्बा शाहिद है कि क़ज़ाए हाजत के लिये सलाते ग़ौसिया तीर ब-हदफ़ है। तजर्बा कीजिये बशर्ते कि अक़ीदा मुस्तहकम हो और शिर्क का हैज़ा भी न हो।

नोटः- यह नमाज़ बाद नमाज़े मग़रिब पढ़ी जाती है।

तरीक़ा सलाते ग़ौसिया

अव्वल दोगाना बदस्तूर मुरव्वजा अदा करे, सज्दा में जाए और पढ़े "اللھم انت الکل والیك الکل وکل الکل" बाद ग्यारह क़दम बग़दाद की जानिब चले और एक एक क़दम एक एक इस्म मिन-जुम्ला या वह अस्माए आँ-हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पढ़े, बाद में क़दमे रास्त चप पर रख कर यह तसव्वुर करे कि गोया रू-बरूए ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हाज़िर है और अर्ज़ करेः یا شیخ الثقلین اغثنی وامددنی فی قضاء حاجتی ھذہ बाद सूरए फ़ातिहा व सूरए इख़लास ग्यारह ग्यारह दफ़ा पढ़े और पसपा (पीछे) होकर मुसल्ले पर आए और हर क़दम पर एक एक नाम आँ-हज़रत का ज़बान पर लाए और मुसल्ले पर आकर तसव्वुरे हुज़ूरी रौज़ए मुनव्वर ग़ौस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का करे और फ़ातिहा पढ़े और कहे السلام علیك یا شیخ الثقلین اغثنی وامددنی बाद में बैठ कर पढ़ते रहे, इन शाअल्लाह मतलब हासिल होगा।

तजर्बा उवैसी ग़फ़रलहु

फ़क़ीर ने इसे अपनी ज़िन्दगी में बहुत आज़माया है यहाँ तक क़त्ल के नाजाइज़ मुक़द्दमात वालों ने इसे मुसलसल पढ़ा तो अल्हम्दु लिल्लाह बा-इज़्ज़त बरी हुए।

(४) किताब ''अनहारुल मफ़ाख़िर'' में है कि یا شیخ عبد القادر شیأً للہ दावाते अज़ीमा व असरारे फ़ख़ीमा और क़ज़ाए हाजात में मशाइख़े

क़ादरिया के मामूलात व मुजर्रबात से है और रिसाला ग़ौसिया मन्क़ूल अज़ रिसाला ''हक़ीक़तुल हक़ाइक़'' है कि हज़रत ग़ौसुल आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया है कि रफ़ा हाजत व क़ुर्बत और मुश्किल कुशाई के लिये मेरा इस्म ख़ुदा तआला के इस्मे आज़म की मानिन्द है। और हज़रत शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि किताब ''इन्तिबाह फ़ी सलासल औलिया अल्लाह'' में फ़रमाते हैं कि बाज़ अस्हाबे क़ादुरिया वास्ते हुसूले मक़सद के ख़त्म करते हैं और ग्यारह मर्तबा ياشيخ عبدالقادر شيأ لله पढ़ते हैं तो कामयाब हो जाते हैं।

नोटः- सिलसिलए क़ादरिया की क़ैद इत्तिफ़ाक़ी है, हर सिलसिले वाला पढ़ सकता है।

तजर्बा ऊवैसी ग़ुफ़िरा लहू

फ़क़ीर ने नमाज़ ग़ौसिया को बारहा आज़माया है, दूसरों को बताया है तो वह भी कामयाब हुए। बाज़ तो उन में ऐसे भी हैं कि संगीन मुक़द्दमात मसलन क़त्ल वग़ैरा में नमाज़ को मुसलसल पढ़ते रहे या उनके अज़ीज़ व अक़ारिब ने पढ़ा तो बा-इज़्ज़त मुक़द्दमात से बरी हुए। الحمدلله علیٰ ذٰلك۔

ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और सलातुल असरार यानी नमाज़े ग़ौसिया

ख़ुद हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमायाः

''من صلیٰ رکعتین بعد المغرب یقرأ فی کل رکعة بعد الفاتحه سورة الاخلاص احدے عشر ثم یصلی علیٰ رسول الله ثم یخطو الی جهة العراق عشرة یخطوه و یذکر حاجته فانها تقضی بفضل الله و کرمه۔'' (बहजतुल असरार)

और हर रकअत में सूरए अल्हम्दु के बाद सूरए क़ुल हुवल्लाहु ग्यारह बार पढ़े। फिर बाद सलाम नमाज़ हज़रत रसूले अकरम ﷺ पर सलाम व दुरूद शरीफ़ पढ़े, फिर ग्यारह क़दम बग़दादे मुअल्ला की तरफ़ चले और मेरा नाम ले और जो अपनी हाजत रखता हो उसको ज़िक्र करे,

बेशक ख़ुदा के फ़ज़्ल व करम से उसकी हाजत और मुराद पूरी होगी। इसी बहजतुल असरार वग़ैरा में मरक़ूम है जैसा इसका ज़िक्र ऊपर गुज़र चुका है, यह नमाज़ हरगिज़ हरगिज़ क़ुरआन व हदीस के ख़िलाफ़ नहीं और न मुख़ालिफ़ कोई आयत या हदीस अपने सुबूते दावे में पेश कर सका। हर जगह ज़बानी दावा से काम लिया। तिर्मिज़ी व इब्ने माजा व हाकिम सय्यिदिना सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रावी, हुज़ूरे अक़दस ﷺ फ़रमाते हैं: ''हलाल वह है जो ख़ुदा ने अपनी किताब में हलाल किया और हराम वह है जो ख़ुदा ने अपनी किताब में हराम किया और जिस से सुकूत फ़रमाया वह माफ़ यानी उस में कुछ मुवाख़िज़ा नहीं और इसकी तस्दीक़ क़ुरआने अज़ीम में मौजूद है, फ़रमाता हैः

''یایها الذین اٰمنو لا یسئلو عن اشیاء ان تبدلکم تسٶکم و ان تسئلوا عنها حین ینزل القراٰن تبدلکم عفا الله عنها والله غفور حلیم ٥''

तर्जमाः ऐ ईमान वालो! ऐसी बातें न पूछो जो तुम पर ज़ाहिर की जाएं तो तुम्हें बुरी लगें और अगर उन्हें उस वक़्त पूछोगे कि क़ुरआन उतर रहा है तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएंगी, अल्लाह उन्हें माफ़ कर चुका है और अल्लाह बख़्शने वाला हिलम वाला है। (पारा ७, आयत १००, सूरए मायदा)

ग्यारह क़दम और नमाज़े ग़ौसिया

यह औलियाए किराम के तुर्क़े मुस्तहसना से एक हसीन तरीक़ा है और महबूबों का हर तरीक़ा महबूब होता है। चुनान्चे शाह वलियुल्लाह मुहद्दिस देहलवी लिखते हैं किः ''اجتهاد را دیں راختراع اعمال تصریفیه کشاده است مانند استخراج اطبا نسخهائے قرابادین را۔ (इजितहाद आमाले तस्रीफ़िया के इख़्तिराअ़ का दरवाज़ा खुला है जैसे अतिब्बा क़राबादीन के नुस्ख़े ईजाद करते हैं)

उवैसी ग़फ़रलहु की गुज़ारिश

औलियाए किराम रूहानी मुआलिज तबीब (डॉकटर) हैं। वह रूहानी

इलाज के लिये जितने तरीक़े (आमाल, औराद व वज़ाइफ़ ईजाद करें उन पर एतिराज़ क्यों) अता किये हैं जैसे कि जिस्मानी इमराज़ के लिये एक्सरे वग़ैरा वग़ैरा ईजाद किये गए तो एतिराज़ करने वाला पागल समझा जाएगा। ऐसी औलिया व मशाइख़ के मुन्किर व मोतरिज़ को पागल समझिये।

यही हज़रत शाह वलियुल्लाह ''क़ौलुल जमील'' में अपने और अपने पीराने मशाइख़ के आदाबे तरीक़त व अशग़ाले रियाज़त की निस्बत साफ़ लिखते हैं कि यह ख़ास अशग़ाल हुज़ूर ﷺ से साबित नहीं हुए और शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब हाशिया क़ौलुल जमील में फ़रमाते हैं कि इसी तरह पेशवायाने तरीक़त ने जल्सात व हियात वास्ते अज़कारे मख़सूसा के ईजाद किये हैं। मुनासिबाते मख़्फ़िया के सबब से जिन को मर्दे साफ़िज़्ज़हन और उलूमे हक़्क़ा का दरियाफ़्त करता है इला क़ौलहु तो उस को याद रखना चाहिये। मौलवी ख़ुर्रम अली इसे नक़्ल करके लिखते हैं यानी ऐसे उमूर को ख़िलाफ़े शरअ या दाख़िल बिद्दआते सय्यिआ न समझना चाहिये जैसा कि बाज़ कम फ़हम समझते हैं।

नोटः- यह ख़ुर्रम अली वहाबियों देवबंदियों का पेशवा है, इसी लिये हम कहते हैं कि हमारी बात न मानो अपने मुक़्तदाओं, पेशवाओं की तो मानो।

तवज्जोह इलश्शैख़ का सुबूत

मतलब बरारी के लिये किसी बंदए ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ़ के बारे में असलाफ़ रहिमहुमुल्लाह के इरशादात मुलाहिज़ा हों।

जाने जानाँ

अपने मकतूब में फ़रमाते हैं (जाने मन) हर सुब्ह बाद नमाज़ متوجه بفقیر نبشیند بے ناغه توجه میدهم از کسے توجه گیرید۔ उन्हीं मिर्ज़ा साहब के मल्फ़ूज़ात में है कि نسبت ما بجناب امیر المومنین علی کرم اللہ تعالیٰ وجهه میر سید و فقیر را نیازے خاص باآبجناب ثابت است دروقت عروض عارضه روحانی توجه باآنحضرت واقع میشود وسبب حصولِ شفامیگردد۔

शाह वलियुल्लाह

आप ने हमआत में हदीसे नफ़्स का यूँ इलाज बताया कि بارواح طیبه مشائخ متوجه حی شود و برائے ایشان فاتحه خواند یا بزیارتِ قبر ایشان رود واز آنجا انجذاب دریوزه کندا۔

फ़ायदाः- मालूम हुआ कि ब-वक़्ते तवस्सुल (महबूबाने ख़ुदा की तरफ़) तवज्जोह दरकार है। यहाँ तक कि जब ख़लीफ़ा मन्सूर अब्बासी ने सय्यिदिना इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा कि दुआ में क़िब्ला की तरफ़ मुंह करूँ या मज़ारे मुबारक हुज़ूर सय्यिदिल मुर्सलीन ﷺ की तरफ़? फ़रमाया कि तू क्यों अपना मुंह उन से फेरता है, वह क़ियामत को तेरे और तेरे बाप हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के अल्लाह तआला की तरफ़ वसीला है। अब उन्हीं की तरफ़ मुंह कर और शफ़ाअत मांग कि अल्लाह तआला तेरी दरख़्वास्त क़ुबूल फ़रमाए।

इन अहादीस व रिवायात व कलिमाते तय्यिबात से रोज़े रौशन की तरह आशकार हो गया कि हंगामे तवस्सुल महबूबाने ख़ुदा की तरफ़ मुंह करना चाहिये, अगर्चे क़िब्ला को पीठ हो और दिल को उनकी तरफ़ ख़ूब मुतवज्जेह करे यहाँ तक कि हर ईं व आँ ख़ातिर से दूर हो जाए। यह सलातुल असरार यानी नमाज़े ग़ौसिया हज़राते मशाइख़े किराम की मामूल और क़ज़ाए हाजात के लिये आला वसीला और इज़ाम की मक़बूल और ख़ुद जनाब ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी व मन्क़ूल है, जिसे बड़े बड़े उलमा अपनी अपनी किताबों में नक़्ल व रिवायत बयान करते और इसके पढ़ने की इजाज़त लेते देते चले आए हैं। इसको ख़िलाफ़े क़ुरआन व हदीस और ख़ुलफ़ाए राशिदीन व अजिल्ला ताबईन और बिद्दत और गुनाह कहना सरासर बे-समझी और हट धर्मी है। क्योंकि हज़राते मशाइख़े किराम रहमतुल्लाहि अलैहि के जैसे और आमाल व औराद मसलन नफ़ी व इसबात, हब्से दम, शुग़ल बरज़ख़ व तसव्वुरे शैख़ और आदाब व अशग़ाल वग़ैरा हैं, वैसे यह नमाज़ भी क़ज़ाए हाजत के लिये एक अमल और मशरूअ़ वसीला है, जो बाद अज़ नमाज़ हुसूले मक़सद व

फ़ैज़ के लिये अल्लाह तआला के महबूब की तरफ़ अपना मुंह व तवज्जोह करना जाइज़ है ताकि इसके सच्चे इख़लास व एतिक़ाद की वजह से इस पर महबूब प्यारे की तरफ़ से अनवार व बरकात का नुजूल हो जैसे नमाज़ मफ़रूज़ा इमाम अपना मुंह मुक़्तदियों की तरफ़ इसलिये फेर लेता है कि उन दोनों की नूरानियत एक दूसरे पर वारिद होकर हर एक की कमी बेशी को पूरा करे जो हरगिज़ शिर्क व मना नहीं, वरना सिम्ते कअ़बा भी शिर्क व हराम हो जाएगी और नेज़ मक़बूलाने ख़ुदा की सूरते मुबारक के ख़्याल और नामे पाक के ज़िक्र और उनकी तरफ़ इल्तिफ़ात और निदा व तवस्सुल करने से हल्ले मुश्किल व फ़ैज़ान हासिल होता है। जैसे सहाबा किराम जंगे यरमूक वग़ैरा में इस तरह करने से फ़त्हयाब व फ़ैज़ मआब हुए और इस तरह की इस्तिआनत हक़ीक़त में इस्तिआनत ब-ख़ुदा है, इस्तिआनत बिल-ग़ैर नहीं। इसलिये कि वह एक महले इआनत बारी तआला है, वरना नमाज़ व सब्र वग़ैरा से भी इस्तिआनत हराम व मना ठहरेगी क्योंकि वह भी कोई माबूदे ख़ुदा नहीं हैं।

बग़दाद शरीफ़ की तरफ़ चन्द क़दम चलने की वुजूह

(१) हाजत से पहले दो रकअत नमाज़ की तक़दीम मुनासिब के अल्लाह तआला फ़रमाता है: "واستعينوا بالصبر والصلوٰة" फिर कामिल अकसीर यह कि किसी महबूबे ख़ुदा के क़रीब जाए अगर्चे ख़ुदा हर जगह सुनता है और बे-सबब मग़फ़िरत फ़रमाता है, जैसे फ़रमाने बारी है: "ولو انهم اذ ظلموا انفسهم جاؤك فاستغفروا الله واستغفر لهم الرسول لوجدوا الله توابا رحيماً-"

तर्जमा: ''और हम ने कोई रसूल न भेजा मगर इसलिये कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इतआत की जाए और अगर जब वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से माफ़ी चाहें और रसूल उनकी शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा कुबूल करने वाला महरबान पाएं। (प ५, सूरए निसा, आयत ६३)

गोया गदाए सरकारे क़ादरिया उस आस्ताने फ़ैज़ निशान से दूर व

महजूर है गो बाद नमाज़ मज़ारे अक़दस तक जाने की हक़ीक़त उसे मयस्सर नहीं, ताहम दिल से तवज्जोह करना और चन्द क़दम उस सिम्त चल कर उन चलने वालों की शक्ल बनाता है कि सय्यिदे आलम ने हदीसे हसन में इरशाद फ़रमाया है: "من تشبه بقومٍ فهو منهم" यानी जो किसी क़ौम से मुशाबहत करे, वह उन्ही से है।

(२) तवज्जोह ज़ाहिर व बातिन का उनवान मिल जाए। इसी लिये यह चलना मुक़र्रर हुआ कि हालते क़ालिब हालते क़ल्ब पर शाहिद हो। जैसे हुज़ूर ﷺ ने नमाज़े इस्तिस्क़ा में क़ल्बे रिदा फ़रमाया कि क़ल्बे लिबास क़ल्बे अहवाल व कश्फ़ बाएं की ख़बर दे और नेज़ चादर को इसलिये उलटाया ताकि हाल बदल जाए और अम्रे मख़्फ़ी ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ का इज़हार हो, तो यह चन्द क़दम ब-सूए बग़दाद चलना इसलिये है कि इस में अम्र मख़्फ़ी ख़ुशूअ़ का इज़हार तो क़वी है फिर यह नाजाइज़ क्यों कर होगा।

(३) सही मुस्लिम शरीफ़ में ब-रिवायत हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु साबित है कि यह सय्यिदे आलम ﷺ ऐन नमाज़ में चन्द क़दम आगे बढ़े, जब जन्नत ख़िदमते अक़दस में इतनी क़रीब हाज़िर की गई कि दीवारे क़िब्ला में नज़र आई यहाँ तक कि हुज़ूर ﷺ बढ़े तो उसके ख़ोशा हाए अंगूर दस्ते अक़दस के क़ाबू में थे और यह नमाज़ सलाते कसूफ़ थी। इस तरह जब अरबाबे बातिन व असहाबे मुशाहिदा यह नमाज़ पढ़ कर बर वजह तवस्सुल इराक़ शरीफ़ की तरफ़ मुतवज्जह होते हैं और अनवार व बरकात और फ़ुयूज़ व ख़ैरात उस जानिबे मुबारक से ब-हज़ाराँ जोश व हुजूमे पैहम आते हुए नज़र आते हैं, तो यह बेताबाना उन ख़ोशा हाए अंगूर जन्नाते नूर व बाग़ाते सुरूर की तरफ़ क़दमे शौक़ बढ़ाता और उन अज़ीज़ महमानों के लिये रस्मे बाजमाल तलक़ी व इस्तक़बाल बजा लाता है। सुब्हानल्लाह किया जाए फिर इस में क्यों इन्कार है उस नेक बंदे पर जो अपने रब की बरकात व ख़ैरात की तरफ़ रुजूअ़ करता है।

(४) जब सय्यिदिना मूसा अलैहिस्सलाम का ज़मानए इन्तिक़ाल क़रीब आया तब बन में तशरीफ़ रखते थे और अर्ज़े मन मूसा पर जब्बारीन का क़ब्ज़ा था। वहाँ तशरीफ़ ले जाना मयस्सर न हुआ तो दुआ फ़रमाई कि उस पाक ज़मीन से मुझे एक फिरकी मिक़दार क़रीब कर दे। शैख़े मुहक़्क़िक़ शरह मिश्कात में दुआए मूसा अलैहिस्सलाम का यूँ तर्जमा करते हैं: تردیک گرداں مراازاں اگرچہ مقدار یک سنگ اندازہ باشد۔ ظاھر ھے کہ برائے قضائے حاجت۔ सरे दस्त इराक़ शरीफ़ की हाज़िरी मुश्किल, लिहाज़ा चन्द क़दम उस अर्ज़े मुक़द्दसा की तरफ़ चलना ऐसे है कि बग़दाद न सही उसकी गर्दे राह सही।

(५) बादे सलातुल असरार व तलबे हाजात जानिबे बग़दाद शरीफ़ चलना गोया उसे उस तरफ़ लब्बैक लब्बैक की आवाज़ सुनाई देती है, इसलिये कि उस तरफ़ कान लगाता हुआ चलता है।

(६) छटे यह कि नमाज़े ग़ौसिया की बरकत से जो अनवार ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ से उसको दिखाई देते हैं तो यह उनको लेने के लिये दामन फैलाए हुए उस तरफ़ को जाता है।

नूरे ग़ालिब ऐमन अज़ नुक़्स व ग़सक़ दरमियान असबईन नूरे हक़
हक़ ग़शानद आन नूर रा बर जानहा मुक़बलान बर्दाश्ता दातानहा

(७) ब-फ़ज़्ले ख़ुदा दुनिया में ग़ौस बहुत हुए हैं, तो यह बग़दाद की तरफ़ चल कर इस बात को बताता है कि मैं उस ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ मुतवज्जह हूँ जो ग्यारह नाम से ग्यारहवीं शरीफ़ वाले मुर्शिदे कामिल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बग़दाद शरीफ़ में रहते हैं। जब दुनिया में बड़े बड़े अक़ताब व अग़वास बग़दाद को तशरीफ़ ले जाते थे तो बग़दाद शरीफ़ की तरफ़ चलने को कौन अम्र मानेअ़ है।

(८) जब इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि दो रकअत नमाज़े हाजत पढ़ कर इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के मज़ारे मुबारक की तरफ़ चलते थे और किसी ने आप रहमतुल्लाहि अलैहि के इस फ़ेअ़ल का इन्कार नहीं किया तो क्या वजह है कि नमाज़े ग़ौसिया के बाद बग़दाद की तरफ़ चलना नाजाइज़ हो?

(९) जब नमाज़े ग़ौसिया हज़राते मशाइख़े किराम की मामूल और क़ज़ाए हाजात के लिये आला वुसूल और उलमाऐ इज़ाम की मक़बूल और ख़ुद जनाबे पाक से मरवी व मन्क़ूल है तो फिर किसी को इस में दम मारने और चूँ व चरा करने और कुफ़्र, शिर्क कहने की मजाल नहीं।

(१०) नमाज़े ग़ौसिया भी क़ज़ाए हाजत के लिये मिस्ल आमाले मशाइख़ एक अमल और मशरूअ़ वसीला है, इस में बिद्दत व हुर्मत वग़ैरा कुछ नहीं।

(११) सफ़ाई दिल के लिये ग़ौसे पाक रज़ियल्लहु तआला अन्हु की नूरानियत हासिल करने को बग़दाद शरीफ़ की तरफ़ मुंह किया जाता है जो कि इसी ग़र्ज़ के लिये है। नमाज़े मफ़रूज़ा के बाद इमाम को अपना मुंह मुक़्तदियों की तरफ़ फेरना सुन्नत है।

(१२) ब-वक़्ते मुसीबत मक़बूलाने ख़ुदा की तरफ़ मुंह व निदा व तवज्जोह करना, उनको वसीला पकड़ना ममनूअ़ व नाजाइज़ नहीं क्योंकि सहाबा किराम ने जंगे मरहुल क़बाइल व जंगे यरमूक वग़ैरा में तवज्जोह मदीना मुनव्वरा व रसूले अकरम ﷺ की है।

(१३) तवज्जोह हाज़ा अस्ल में तवज्जोह ब-ख़ुदा है क्योंकि वह उनको एक मज़हर औने इलाही समझता है जिससे तवज्जोह बिल-ग़ैर मना व हराम न हुई वरना तवज्जोह ब-क़िब्ला व रसूले अकरम ﷺ भी हराम व शिर्क और कुफ़्र होगी।

११ अदद की ख़ुसूसियत

तख़सीस ग्यारह क़दम की इसलिये है कि यह वित्र है और वित्र ख़ुदा तआला को बहुत पसंद है क्योंकि वह भी वित्र है। चूँकि अफ़ज़लुल औतार एक है और या फ़ज़्लुल औतार का पहला इर्तिफ़ाअ़ है, जो ख़ुद भी वित्र मुशाबहत ज़ौज भी बईद कि सिवा एक के कोई कसर सही नहीं और इससे एक घटा देने के बाद भी ज़ौज हासिल हुआ, ज़ौज महज़ है न ज़ौजुल अज़वाज कि इसके दोनों ख़सस मुसाविया ख़ुद अफ़राद हैं। किताब

हुज्जतुल्लाहुल बालिग़ा में हैं कि इमामुल आदाद यानी गिनती के आदाद का इमाम और पेशवा एक का अदद है। जब हिकमते इलाही ने अकसर अदद के साथ अम्र करना चाहा तो ऐसे अदद को इख़्तियार व पसंद किया कि जिससे आगे बढ़ना हासिल हो जैसे एक कि ग्यारह तक बढ़ता है और यह तमाम दहाइयों से अव्वल दहाई है, जो एक के ज़्यादा होने से बढ़ा है जिससे ग्यारह हो गए। इसी तफ़ाइल से ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ क़दम और इस्मा ग्यारह का इन्तिख़ाब हुआ।

जवाज़े निदाए या शैख़ अब्दुल क़ादिर रज़ियल्लाहु अन्हु

क़दीम से उलमाए अहले सुन्नत फ़रमाते चले आए और इस पर उनका अमल भी रहा कि वज़ीफ़ा "یاشیخ عبدالقادر جیلانی شیأ للہ" हसबे फ़रमूदए जनाब ग़ौसे आलिया मूजिब कश्फ़े करबात व क़ज़ाए हाजात है। यह मस्अला इस क़ाबिल नहीं कि यह वहाबियों देवबंदियों से दरियाफ़्त किया जाए क्योंकि उन्हों ने شیأ للہ के लफ़्ज़ में बहस की है, वह या शैख़ के लफ़्ज़ निदा में शिर्क कह दिया है। यह उनका ग़लत अंदाज़ है। उनका ख़्याल है लफ़्ज़ लाम बराए हाजत है और ख़ुदा को किसी चीज़ की हाजत नहीं, वह ग़नी मुतलक़ हैं तो वह ख़दशा इस कलिमा में है जो जुम्ला आलम में राइज है। जैसा कहते हैं ख़ुदा के वास्ते कपड़ा दो या रोटी दो या रुपया दो। अगर मूजिबे ख़्याल उन मोतरिज़ीन के एतिक़ाद किया जाए तो आसी व ख़ासी यह ज़बान पर न लाए कि ख़ुदा के वास्ते यह चीज़ दो। इस कलिमा में कुल आलम गिरफ़्तार है, मानेईन ख़ुद हर मौक़ा व महल में यही कलिमा बोलते हैं।

ख़ुलासा यह कि जब यह कलिमा मशाइख़े किराम अपने तलामज़ा व मुरीदों को बराए कश्फ़ करबात बतरीक़े मख़सूस फ़रमाते हैं और हज़रत ग़ौसे पाक क़ुद्दिस सिर्रुहु ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया है, अगर किसी को कोई ख़दशा हो तो मालूम हुआ कि उन सब मशाइख़ ख़ुसूसन शैख़ क़ुद्दिस सर्रुहु का मुआनिद व मुख़ालिफ़ है और उलमाए महक़्क़िक़ीन और फ़ुक़हा व मुफ़्तियान रहिमहुमुल्लाह ने यह भी फ़रमाया है कि और औलिया अल्लाह

आदात व रुसूम से गुज़र कर फ़ानी हो जाते हैं आलमे दुनिया में भी क़ब्ल अज़ दुख़ूल दर जन्नत मज़हर तजल्ली अलीम व क़दीर हो जाते हैं और दर इस्तिलाहे सूफ़िया किराम उस कामिल को अब्दुल क़ादिर कहते हैं। फ़क़ीर का ख़्याल है कि वजह निदाए ग़ौसिया आलिया में ब-इस्मे अब्दुल क़ाद्रिर जो वज़ाइफ़ व औराद में बर वक़्त हल्ले मुश्किलात पढ़ते हैं یاشیخ عبدالقادر جیلانی شیأ للہ ही है कि इन्दुल हाजत हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस इस्म के साथ पुकारना मुनासिब है कि उनको इस इक़्तिदा पर इस वस्फ़ में याद करना मूजिबे तवज्जोह क़ुदरते हक़ है और शैख़ अब्दुल करीम जीली रहिमहुमुल्लाह बाब १३ किताबुल इन्सान में फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला जब अपने बंदे पर किसी इस्म से जल्वा फ़रमाता है तो उस में वह बंदा फ़ानी हो जाता है, पस अगर कोई शख़्स इस हालत में अल्लाह को पुकारे तो बंदा उसका जवाब देता है और अगर बंदा तरक़्क़ी करके ब-मक़ामे बक़ा वासिल हो तो अल्लाह तआला उस बंदा के पुकारने वाले को जवाब देता है, पस अगर कोई या रसूलल्लाह ﷺ कहेगा तो अल्लाह तआला उसके जवाब में लब्बैक फ़रमाएगा।

फ़क़ीर उवैसी ग़ुफ़िरा लहू ने अपनी किताब जामेउल कमाल में लिखा है कि औलिया रिजालुल फ़त्ह व रिजालुत्तहत वस्सफ़ल शुमार होते हैं, चुनान्चे हज़रत क़ुदवतुल मुहक़्क़िक़ीन शैख़ अकबर क़ुद्दिस सर्रुहु ने फ़ुतूहाते मक्किया सफ़्हा १८ जिल्द २ में फ़रमाया है कि मिन-जुम्ला इनके एक रजल होता है और गाहे औरत भी होती है वह क़ाहिर फ़ौक़ इबादा होता है उसकी इस्तिताअत अल्लाह तआला के सिवा कुल शए पर है उन में شجاع مقدام۔ کثیر الدعویٰ بحقٍ۔ یقول حقاً ویحکم عدلا کان صاحب ھذا القادر شیخنا عبدالقادر جیلانی ببغداد۔ यानी बहादुर, पेश क़दम मअरका जंग में हक़ के साथ बड़े बड़े दावे करने वाल सच कहता है और इन्साफ़ व अदल से हुक्म करता है, इस मक़ाम के मालिक हमारे शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी क़ुद्दिस सिर्रुहु बग़दाद शरीफ़ में थे। उनका बदबदा

व ग़लबा ख़ल्क़ पर हक़ के साथ था, वह बड़ी शान वाले हैं और उनके वाक़िआत मशहूर हैं। मेरी उन से मुलाक़ात नहीं हुई। अब उससे सुन कर जिसकी विलायते कामिला की गवाही ज़माना देता है, पूरे वुसूक़ से वही कहता है जो उन (हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के लायक़ है और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मदद तो इतना ज़ाहिर बाहिर है कि आफ़ताब से रौशन तर। इस मौज़ूअ़ पर मुताद्दिद कुतुब व रसाइल मौजूद हैं। इस ज़िम्न में फ़क़ीर अर्ज़ करता है।

مشکلات بیعدد داریم ما — شیأً للہ شیأً للہ غوث الاعظم پیرما
درد مارا ازیں غم کن جدا — دستگیرائے دستِ تو دستِ خدا
گرچہ میدانی بصفوت حال ما — بندہ پرورگوش کن اقوالِ ما
مشکلاتِ ہر ضعیفے از توحل — بندہ باشد درضعیفی خود مثل
شہرہ مادر ضعف واشکستہ پری — شہرہ تو درلطف و مسکین پروری
ایکے تو در اطباق قدرت منتھی — منتھی ما در کمی و گمرھی
یاحضرت غوث پاک وقت مدداست — شدسیہ زدرد چاک وقت مدداست

वज़ीफ़ा की लफ़्ज़ी व मानवी तहक़ीक़

یاشیخ عبدالقادر جیلانی شیأً للہ के अल्फ़ाज़ बा-माना को ख़्याल कीजिये मसलन लफ़्ज़ अव्वल या शैख़ ब-माना बुज़ुर्ग, और लफ़्ज़े दोम अब्द ब-माना बंदा, लफ़्ज़े सोम अल-क़ादिर। यह ऐसी जामेअ़ सिफ़त है कि ख़ुदा के साथ ही ख़ास है, चहारुम लफ़्ज़ शैअन ब-माना कोई चीज़, यह नकरह है। इसमें अल-अशिया नहीं जो तसर्रुफ़े कुल्ली का एहतिमाल पैदा हो, पंजुम लफ़्ज़े लिल्लाहि ब-माना बराए ख़ुदा यानी ख़ुदा के वास्ते। यह लफ़्ज़ क़ुरआन में बार बार आया है जैसा कि فان خمسہ और हदीस में है: من اعطی للہ (वग़ैरा) पस इन अल्फ़ाज़ के साफ़ मानों से ब-ख़ूबी वाज़ेह हो गया कि इस वज़ीफ़ा के पढ़ने वाला हज़रत ग़ौसुल आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को न ख़ुदा समझता है, न ख़ुदा का शरीक व

हमसर बल्कि एक बुज़ुर्ग, ख़ुदा का बंदए ख़ास जानता है। फिर इस में कुफ़्र व शिर्क वग़ैरा कहाँ से आ गया।

यानी दलाइल से साबित है कि یاشیخ عبدالقادر جیلانی شیأً में निदा व इस्तग़ासा है लेकिन इसके जवाज़ के लिये उलमा ने जवाज़ का फ़तवा दिया है चुनान्चे हज़रत ख़ैरुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि उस्ताज़ मुसन्निफ़ दुर्रे मुख़्तार रहिमहुमुल्लाह ने फ़तावा ख़ैरिया में लिखा कि:

"سئل فی دمشق عن الشیخ العمادی فیما اعتادہ السادۃ الصوفیۃ میں حلق الذکر بالجھر فی المساجد من الجماعۃ ورثوا ذالك من آبائہم و اجداد ھم والصادرۃ من ذوی المعارف الالٰھیۃ کالقادریۃ والسعدیۃ ویقولون یا شیخ عبدالقادر یا شیخ احمد الرفاعی شیأً ونحوذلك ویحصل لھم فی اثناء الذکر وجد عظیم (اجاب) بعد ما ذکر ان حقیقۃ ما علیہ الصوفیۃ لاینکر ھا الاکل نفس جاھلۃ غیبۃ وبعد ماذکر جواز حلق الذکر والجھریۃ وانشاد القصائد والاشعار فی المسجد بما صورۃ واما قولھم یاشیخ عبدالقادر فھونداء واذا ضیف الیہ شیأً اللہ فھو طلب شئی اکراماً اللہ فھو جائز ولایجوز الاغترار بقول من انکرہ اونقلہ من الوھبانیۃ نظراً الیٰ ان معناہ اعط اللہ شیأً وھٰذا لمعنی لایجوز قطعا وعلیٰ ھٰذا نقل صاحب الدر المختار غیر جوازہ والحال انہ لا یحتاج ببال احد من المسلمین ان اللہ فقیر اعطہ شیأً نعوذ باللہ من ذالك بل معناہ الصحیح لتلك الکلمۃ اعطنی شیأً لوجہ اللہ وھٰذا جائز وصحیح ونظیرہ فی القرآن معمول وموجود فان اللہ خمسہ وللرسول۔"

दमिश्क़ में शैख़ इमादी से सवाल कि सादाते सूफ़िया की आदत है कि वह मसाजिद में हल्क़ए ज़िक्र बिल-जहर करते हैं और वह ऐसे ही अपने आबा व अजदाद से करते चले आए हैं और वह भी आरिफ़ीन कामिलीन थे और सिलसिलए क़ादरिया व सईदिया के हज़रात ऐसे ही करते हैं और साथ یاشیخ عبدالقادر الجیلانی، یاشیخ احمد الرفاعی شیأً للہ वग़ैरा वग़ैरा और ज़िक्र करके अस्ना में बड़ा वजद करते हैं।

आप रहमतुल्लाहि अलैहि ने जवाबन फ़रमाया कि सूफ़िया का इन्कार करना जाहिल और ग़बी का काम है। ज़िक्र बिल-जहर का हल्क़ और मसाजिद में अशआर व क़साइद पढ़ना भी जाइज़ है और या शैख़ अब्दुल क़ादिर में निदा है और इसके बाद शैअन लिल्लाह कहना भी जाइज़ है। इसके क़ौल के मुन्किर से धोका न खाना चाहिये। यह वाक़िआ रहबानिया ने नक़्ल किया है। इसका मानी यह है कि अल्लाह के लिये कुछ दो यानी उसे दे दो हालांकि वह किसी का मुहताज नहीं और न वह फ़क़ीर है (नऊज़ु बिल्लाह) बल्कि इसका मानी यह है कि मुझे फ़ी सबीलिल्लाह कुछ दे और यह जाइज़ है और मामूल बह है। इसकी नज़ीर क़ुरआने मजीद में है:

उवैसी फ़क़ीर ग़फ़रलहु ने "ياشيخ عبدالقادر الجيلانی شیاً لِلّٰه" पर एक अलाहिदा रिसाला लिखा है, इस में अजीब व ग़रीब बहसें हैं। यहाँ सिर्फ़ एक ही हवाला पर इक्तिफ़ा करता हूँ।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु का इस्लामी इल्मी कमाल

आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने दौर में इहयाए इस्लाम का वह कारनामा सर-अंजाम दिया कि किसी वली कामिल को नसीब न हुआ, इसी लिये मिन जानिब अल्लाह आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुहिय्युद्दीन का लक़ब नसीब हुआ। रूए ज़मीन में कोई ऐसा ख़ित्ता न था जहाँ आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़ुयूज़ व बरकात न पहुंचे हों और ताहाल वही हाल है जैसा आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में था। बिफ़ज़्लिही तआला सय्यिदिना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नियाबते रसूल ﷺ का पूरा पूरा हक़ अदा फ़रमाया। उनकी सलाहियत का एतेराफ़ मुख़ालिफ़ीन को भी है। आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते हक़ परस्त पर कसीर तादाद में लोगों ने तौबा की। शैख़ उमर अलकीमानी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं:

"لم تکن مجالس سیدنا الشیخ عبدالقادر رضی الله عنہ تخلو ممن

یسلم من الیهود والنصارىٰ ولا ممن یتوب من قطاع الطریق وقاتل النفس وغیره ذالك من الفساد ولا ممن یرجع عن معتقد شئی۔"

यानी आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मजालिसे शरीफ़ा में से कोई मजलिस ऐसी नहीं होती थी जिस में यहूद व नसारा इस्लाम क़ुबूल न करते हों या डाकू, क़ज़्ज़ाक़, क़ातिलुन नफ़्स, मुफ़सिद और बद-एतिक़ाद लोग आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते हक़ परस्त पर तौबा न करते हों। (बहजतुल असरार, स ६६)

खुद हुज़ूर सय्यिदिना महबूबे सुब्हानी, क़ुत्बे रब्बानी, शहबाज़े लामकानी क़ुद्दिस सर्रुहुन नूरानी फ़रमाते हैं: "قد اسلم علیٰ یدی اکثر من خمسة آلاف من الیهود والنصارىٰ وتاب علیٰ یدی من العیارین و المسالحة اکثر من مائة الف خلق کثیر۔"

बेशक मेरे हाथ पर पाँच हज़ार से ज़ायद यहूद और नसारा ने इस्लाम क़ुबूल किया और एक लाख से ज़्यादा डाकुओं, क़ज़्ज़ाक़ों, फ़ुस्साक़, फ़ज्जार, मुफ़सिद और बिद्दती लोगों ने तौबा की। (क़लाइदुल जवाहर, स १६)

शैख़ उमर अलकीमानी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते अक़दस में तेरह शख़्स इस्लाम क़ुबूल करने के लिये हाज़िर हुए। मुसलमान होने के बाद उन्हों ने बयान किया कि हम लोग अरब के ईसाई हैं, हम ने इस्लाम क़ुबूल करने का इरादा किया था और यह सोच रहे थे कि किसी मर्दे कामिल के दस्ते हक़ परस्त पर इस्लाम क़ुबूल करें। इसी अस्ना में हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई कि बग़दाद शरीफ़ जाओ और शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के मुबारक हाथों पर इस्लाम क़ुबूल करो। "فانه یوضع فی قلوبکم من الایمان عنده ببرکته مالم یوضع فیما عند غیره من سائر الناس فی هٰذا الوقت۔"

यानी इस वक़्त तुम्हारे क़ुलूब पर ईमान की दौलत अता करना ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बरकत से है सिवाए उनके कोई और ऐसा काम नहीं कर सकेगा।

वैसे आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वअज़ व तक़रीर में हज़ारों का मजमा होता और कोई ऐसी मजलिस न थी जिस में चन्द जनाज़े न उठते हों।

क़ायदा इस्लामिया

इस्लाम का क़ायदा है कि अल्लाह तआला जब किसी बंदे पर खुश होता है तो उसे मरातिबे उलया से नवाज़ता है। यहाँ तक कि उसे कुन फ़यकून की मंज़िल तर रसाई होती है। चुनान्चे हज़रत ग़ौसुल आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी किताब ''फ़ुतूहुल ग़ैब'' मक़ाला १६-४६ में तहरीर फ़रमाते हैं कि ''قال اللہ تعالیٰ فی بعض کتبہٖ یا ابن آدم انا اللہ الذی لا الہ الا انا اقول لشئی کن فیکون اطعنی اجعلك تقول لشئی کن فیکون وقد فعل ذٰلك بکثیر من انبیائہٖ واُولیائہٖ وخواصہ من بنی آدم۔''

यानी अल्लाह तआला ने अपनी बाज़ किताबों में यूँ फ़रमाया है कि ऐ फ़रज़ंदे आदम मैं वह खुद हूँ कि सिवा मेरे कोई माबूद नहीं। जब मैं किसी चीज़ को कहता हूँ हो, पस वह उसी वक़्त हो जाती है। तू मेरी ताबेअ़दारी कर, तो मैं तुझे ऐसा कर दूँ कि जब तू भी किसी चीज़ को कहेगा हो तो वह फ़ौरन हो जाए और बेशक अल्लाह तआला के बहुत से अंबिया और औलया और फ़रज़ंदाने आदम से उसके ख़ास लोगों ने किया है।

हज़रत क़ुत्बुल वक़्त इमाम अबुल मवाहिब मुहम्मद अब्दुल वहाब शेअ़रानी क़ुद्दिस सिर्रुहु ने तहरीर फ़रमाया कि

''اصحاب الاحوال فان الاشیاء کلھا تتکون علیٰ ھممھم لان الانسان عجل لھم نصیبا من احوالھم فی الجنۃ فھم رجالون۔ (अल-यवाक़ीत वल-जवाहर, स ७० जि २ मबहस ४५)

असहाबे अहवाल वह हैं जिनके इरादों पर अशिया ज़ाहिर होती हैं इसलिये कि जन्नत में जन्नती को इरादों पर अशिया पेश की जाएंगी, यही हज़रात रिजालुल ग़ैब हैं।

फ़ायदाः- हुज़ूर ग़ौसुल आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तो उन

रिजालुल ग़ैब के भी सरताज हैं और रिजालुल ग़ैब आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुज़ूर हाज़िर होकर फ़ैज़याब होते। तफ़सील ''बहजतुल असरार'' में है।

ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के मरातिब व कमालात

आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कमालात बेशुमार हैं मिन-जुम्ला उनके हदियतुल हरमैन मतबूआ मुहम्मदी मई १२६७ हिजरी सफ़्हा ४७ में मज़कूर है कि हज़रत जनाब ग़ौसे आज़म क़ुद्दिस सिर्रुहु ने फ़रमाया है कि तहक़ीक़ लोगों के दिल मेरे हाथ में हैं, अगर मैं चाहूँ तो उनको अपनी तरफ़ से फेर दूँ और अगर चाहूँ तो उन्हें अपनी तरफ़ को फेर लूँ। और हज़रत जनाब इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया है अल्लाह तआला ने मुझे हर शख़्स के अन्दर तसर्रुफ़ अता फ़रमाया है, जो मेरे हुज़ूर में हाज़िर हैं पस मेरे हुज़ूर में ख़्वाह कोई खड़ा हो या बैठे और हिले मगर मैं उसके अन्दर मतसर्रिफ़ हूँ। यह दोनों हवाले ख़ुलासतुल मफ़ाख़िर और बहजतुल असरार में इमाम याफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि से नक़्ल किय गए हैं और इसी तरह इमाम तक़ीउद्दीन सुबकी रहिमहुमुल्लाह और इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि अलैहि से हज़रत जनाब अबू हनीफ़ा नोमान रहमतुल्लाहि अलैहि के मनाक़िब शरीफ़ में हज़रत इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि और हज़रत अब्दुल हक़ देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि से तर्जमा मिश्कात शरीफ़ और तकमीलुल ईमान और शरह जामेअ़ सग़ीर में नक़्ल की गई है लेकिन मैंने इसको इख़्तिसार के लिये छोड़ दिया है।

कमालात व करामात

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कमालात व करामात बेशुमार हैं, उन में से बाज़ का ज़िक्र अर्ज़ कर दूँ।

मुहिय्युद्दीन

यह वह कमाल है कि किसी दूसरे कमाल के देखने की ज़रूरत ही नहीं। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से किसी ने पूछा कि

आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का लक़ब मुहिय्युद्दीन किस तरह हुआ? फ़रमाया कि मैंने मुकाशिफ़ा किया कि एक दिन सैर व सय्याहत के लिये बग़दाद शरीफ़ से बाहर गया हुआ था, जब वापस आया तो देखा कि रास्ते में एक बीमार, ज़िन्दगी से लाचार ख़स्ता हाल मेरे सामने आ खड़ा हुआ और ज़ुअफ़ व नाताक़ती के सबब ज़मीन पर गिर पड़ा और अर्ज़ करने लगा कि ऐ मेरे सरदार! मेरी दस्तगीरी कर और मेरे हाल पर रहम फ़रमा। अपने दमे मसीहा नफ़्स से मुझ पर फूंक ताकि मेरी हालत दुरुस्त हो जाए। मैंने उस पर दम करना ही था कि वह फूल की मानिन्द तर व ताज़ा हो गया, उसकी लाग़री काफ़ूर हो गई और जिस्म में फ़र्बही और तवानाई आ गई।

इसके बाद उस ने मुझ से कहा कि ऐ अब्दुल क़ादिर! मुझ को पहचानते हो? मैंने कहा नहीं, वह बोला मैं तेरे नाना हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ का दीन हूँ। ज़ुअफ़ की वजह से मेरा यह हाल हो गया है। अब मुझे अल्लाह तआला ने तेरे हाथ से ज़िन्दा किया है, तू मुहिय्युद्दीन है, तू मुर्दा दीन को ज़िन्दा करने और उस में नई ज़िन्दगी डालने वाला है, तू दीन का मुजद्दिदे आज़म और इस्लाम मुसलेह अकबर है।

मैं उस शख़्स को वहीं छोड़ कर बग़दाद शरीफ़ की जामेअ मस्जिद की तरफ़ रवाना हुआ। रास्ते में एक शख़्स बरहना-पा भागता हुआ मेरे पास आया और ब-आवाज़े बुलन्द बोला, सय्यिदी मुहिय्युद्दीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

बाद अज़ाँ मैं मस्जिद में आया और दोगाना अदा किया, मेरा सलाम फेरना ही था कि ख़िल्क़त मुझ पर हुजूम करके टूट पड़ी और कानों को गंग कर देने वाली फ़लक पाश आवाज़ से मुहिय्युद्दीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, मुहिय्युद्दीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पुकारने लगी। इससे क़ब्ल मुझे किसी ने इस लक़ब से नहीं पुकारा था, हक़ीक़त भी यही है कि हुज़ूर ग़ौसियत मआब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दीने इस्लाम और रसूले पाक ﷺ की वह मुहय्यरुल उक़ूल ख़िदमात सर-अंजाम दीं, जिनको देख कर

आज हल्क़ए बगोशाने इस्लाम महवे हैरत और अंगुश्त ब-दन्दाँ हैं।

आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तजदीदे दीन, आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सोहबत का असर इरशाद व तर्बियत, इशाअते इस्लाम, अहयाए दीन और तालीम व तल्क़ीने वग़ैरा ज़बरदस्त कारनामों से यह बात शम्से निस्फ़ुन्नहार की तरह वाज़ेह होती है कि आप रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह कश्फ़ बिल्कुल सही है।

अहलुल क़ुबूर की इमदाद

इस मस्अले में अहले इस्लाम का इत्तिफ़ाक़ है, सिर्फ़ मुन्किर हैं तो वहाबी नज्दी और उनके हमनवा फ़िरक़े। इस बारे में फ़क़ीर की तस्नीफ़ है ''अल-इस्तिमदाद मिन अहलुल क़ुबूर'' यहाँ एक हदीस अर्ज़ है। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमायाः

यानी जिस वक़्त तुम उमूरे मुश्किला में हैरान व परेशान हो जाओ तो अहले क़ुबूर (अहले अल्लाह) से मदद तलब करो। यह हदीस अमलन मुजर्रब है। हज़रत इमाम नोवी शारेह मुस्लिम रहमतुल्लाहि अलैहि अपना मुशाहिदा और तजर्बा बयान फ़रमाते हैं:

"حکی لی بعض شیوخنا الکبار فی العلم انه انفلتت له دابة اظنها بغلة وکان یعرف ھٰذا الحدیث فقاله، فحسبها الله علیهم فی الحال وکنت انا مرة مع جماعة فانفلتت منها بهیمة وعجزوا عنها فقلته فوقفت فی الحال بغیر سبب سوی ھٰذا الکلام۔ (नोवी शारेह मुस्लिम की किताबुल अज़कार स १००)

मुझ से एक बहुत बड़े शैख़ व आलिम ने अपना वाक़िआ बयान किया और फ़रमाया कि मेरा ख़च्चर भाग गया और मुझे हुज़ूर ﷺ की यह हदीसे पाक याद थी। मैंने उसी वक़्त पुकाराः "اعینونی یا عباد الله" ''ऐ अल्लाह के बंदो! मेरी मदद करो।'' तो अल्लाह तआला ने उस ख़च्चर को उसी वक़्त रोक दिया। इमाम नोवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि हमारा चौपाया भाग गया, हम उसे पकड़ने से आजिज़ आ गए तो मैंने ब-मुताबिक़ हदीसे हाज़ा अमल किया तो वह सवारी फ़ौरन खड़ी हो गई

और उसके खड़े होने का इस कलाम के सिवा और कोई सबब न था। अलावा अज़ीं अहले क़ुबूर से इस्तिमदाद की बेशुमार हिकायात व हवाला जात हैं। फ़क़ीर के रिसाला "इस्तिमदाद अज़ अहले क़ुबूर" का मुताला करें।

करामाते औलिया हक़

यह जुम्ला मुख़ालिफ़ीन के अक़ायद में भी दाख़िल है और करामात की जुम्ला अक़साम पर इजमालन ईमान लाना ज़रूरी है और यह ११ क़दम वाला मस्अला भी इस इजमाल की तफ़सील है। क्योंकि करामातुल औलिया में उलमा किराम ने लिखा है:

क़ाज़ी सनाउल्लाह पानी पती रहमतुल्लाहि अलैहि तज़किरतुल मौता में लिखते हैं कि औलिया अल्लाह की अरवाह ज़मीन व आसमान और बहिश्त में जिस जगह चाहती हैं चली जाती हैं और अपने दोस्तो व मोतक़िदों की मदद और उनके दुशमनों को हलाक करती हैं और उनकी अरवाह से ब-तरीक़े उवैसिया फ़ैज़े बातिनी पहुंचाती हैं। इसकी जीती जागती दलील सिलसिलए नक़्शबंदिया और सिलसिलए उवैसिया है। वैसे हर सिलसिले में रूहानी फ़ैज़ का इजरा हुआ और हुआ करता है और हो रहा है यानी सिलसिलए क़ादरिया व चिश्तिया और सुहरवरदिया में बातिनी फ़ैज़ जारी हुआ और जारी है। बिल-ख़ुसूस हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बादे विसाल बेशुमार हज़रात को रूहानी बैअत से नवाज़ा और उनका सिलसिला ता-क़ियामत चल रहा है। मसलन सुल्तानुल आरिफ़ीन हज़रत सुल्तान बाहू रहमतुल्लाहि अलैहि वग़ैरा वग़ैरा।

इसलिये वज़ीफ़ा شيأً لله और बग़दाद शरीफ़ की तरफ़ ग्यारह क़दम और उससे रूहानी और ज़ाहिरी फ़वायद हासिल होते हैं। मुन्किर को सिवाए इन्कार बराए इन्कार के और कोई काम नहीं।

अल्लाह तआला हम सब को औलियाए किराम की नियाज़मंदी और उन से फ़ुयूज़ व बरकात हासिल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे। फ़क़त वस्सलाम।

मदीने का भिकारी अल-फ़क़ीर अल-क़ादरी

अबुस सालेह **मुहम्मद फ़ैज़ अहमद ऊवैसी** रज़वी ग़ुफ़िरा लहू

बहावलपूर पाकिस्तान २२ मुहर्रम १४२३ हिजरी बरोज़ हफ़्ता